2003-2004
संगीत नाटक अकादेमी
वार्षिक रिपोर्ट

2003-2004
संगीत नाटक अकादेमी
वार्षिक रिपोर्ट

विषय-सूची

परिशिष्ट

संगीत नाटक अकादेमीः
एक अवलोकन

भारत की संगीत, नृत्य और नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी को आधुनिक भारत की उस रचना प्रक्रिया की देन माना जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप सन् 1947 में भारत को राजनीतिक रूप से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। उन्नीसवीं शताब्दी में आत्म-निर्धारण के आंदोलन के साथ-साथ जैसे ही लोक वातावरण बना देश में कलाओं के मूल्य को एक नई स्वीकृति मिली। कलाओं की अल्पकालिक गुणवत्ता और लोकतंत्रीय प्रणाली के अनुकूल उनके परीक्षण की आवश्यकता को भी अनुभव किया गया ताकि सामान्य जन को उनको सीखने, अभ्यास करने और प्रचार करने के अवसर प्राप्त हो सकें। बीसवीं शताब्दी के पहले कुछ दशकों में जनसाधारण का यह मत रहा था कि कलाओं के परिरक्षण और विकास दोनों का दायित्व राज्य का है।

इस दिशा में सरकार को प्रथम बृहत् सार्वजनिक अपील सन् 1945 में की गई जब बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी ने तीन अकादेमियों यथा अकादेमी ऑफ डांस, ड्रामा एंड म्यूजिक, अकादेमी ऑफ लेटर्स और अकादेमी ऑफ आर्ट्स और आर्किटेक्चर वाले नेशनल कल्चरल ट्रस्ट बनाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

संगीत नाटक अकादेमी नामक नृत्य, नाटक और संगीत की राष्ट्रीय अकादेमी इनमें से पहली थी जिसकी स्थापना भारत सरकार द्वारा की गई। यह केंद्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के नेतृत्व में शिक्षा मंत्रालय के संकल्प द्वारा सृजित की गई थी जिस पर हस्ताक्षर 31 मई, 1952 को किए गए। बाद में इस संकल्प को 7 जून, 1952 के भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया गया था। संगीत नाटक अकादेमी का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा 28 जनवरी, 1953 को भारत की संसद, लोकसभा, का उद्घाटन करने के कुछ दिन पश्चात् किया गया था। मौलाना अबुल कलाम आजाद, जो अकादमी की स्थापना से संबंधित सरकार के संकल्प के क्रियान्वयन के लिए प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी थे, ने अकादेमी की स्थापना के उद्देश्य के बारे में कहा :

> स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बहुत से उन प्रश्नों में से जिनपर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता थी उनमें से एक अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रश्न सांस्कृतिक गतिविधियों के पुनरुत्थान से संबंधित था। पिछले डेढ़ सौ वर्षों में ललित कलाओं, चाहे नृत्य या नाटक, संगीत या साहित्य हों, को अपने पूर्ण विकास के लिए राज्य से वह सहायता या समर्थन प्राप्त नहीं हुआ जिसकी उनको आवश्यकता थी। यह सच है कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से भारत में पुनर्जागरण है जिसका कारण समाज में नई शक्तियों का प्रकट होना है और इसका राज्य से कोई सरोकार नहीं था। इसीलिए, यह इतना व्यापक या गहन नहीं था जितना कि इसे आवश्यक राज्य समर्थन मिलने पर होना चाहिए था . . . .
>
> भारतीय रियासतों ने, जो भारत का लगभग एक-तिहाई भाग हैं, असंदिग्ध रूप से अपने क्षेत्रों में इन कलाओं को समर्थन देने और उनका विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसके लिए वे हमारी कृतज्ञता के पात्र हैं, लेकिन उनके प्रयत्न परिस्थितियों की जरूरतों के अनुरूप नहीं थे। बहरहाल, भारतीय रियासतों की व्यवस्था समाप्त हो जाने से ललित कलाओं को जो संरक्षण वे प्रदान करते थे वह भी अब उपलब्ध नहीं है। लोकतंत्रीय शासन में, कलाएँ लोगों से ही अपना पोषण प्राप्त करती हैं और चूँकि राज्य लोगों की इच्छा शक्ति की संगठित अभिव्यक्ति होती है इसलिए अवश्य ही उसे इसे अपने पहले उत्तरदायित्वों में से एक मानकर उनका अनुरक्षण और विकास करना चाहिए . . . .
>
> भारत की संगीत, नाटक और नृत्य की बहुमूल्य विरासत ऐसी है जिसकी हमें कदर करनी चाहिए और उसका विकास करना चाहिए। ऐसा हमें केवल अपने लिए ही नहीं बल्कि इसे हमें मानव जाति की सांस्कृतिक विरासत के योगदान के रूप में भी करना चाहिए। जीवंत बने रहने के लिए सृजन करना जितना वास्तविक कला के क्षेत्र में है उतना किसी और क्षेत्र में नहीं है। परंपराओं का परिरक्षण

नहीं किया जा सकता केवल उनकी पुनर्रचना की जा सकती है। इस अकादेमी का यह उद्देश्य होगा कि परंपराओं का परिरक्षण उन्हें एक संस्थागत रूप प्रदान करके किया जाए . . .

1952 के संकल्प में सम्मिलित अकादेमी के कार्यों के घोषणा-पत्र में सन् 1961 में मूल कार्यक्षेत्र के साथ-साथ विस्तार किया गया था, जब संगीत नाटक अकादेमी का पुनर्गठन सरकार द्वारा सोसाइटी के रूप में किया गया और इसका पंजीकरण सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 (1957 में यथा संशोधित) के अधीन किया गया था। इन कार्यों का उल्लेख अकादेमी के संगम-ज्ञापन में किया गया है जिन्हें 11 सितंबर, 1961 को सोसाइटी के रूप में पंजीकरण के समय अपनाया गया था।

प्रारंभ से ही अकादेमी, भारत में संगीत, नृत्य और नाटक की प्रथा के लिए समर्थन के एक एकीकृत संरचना के निर्माण की ओर अग्रसर रही है। इस समर्थन में परंपरागत और आधुनिक रूप और शहरी के साथ-साथ ग्रामीण पर्यावरण सम्मिलित हैं। अकादेमी द्वारा प्रस्तुत या संवर्धित संगीत, नृत्य और नाटक के महोत्सव सारे भारत में आयोजित किए जाते हैं। प्रदर्शन कलाओं के महान शिक्षक अकादेमी की रत्न सदस्यता से सम्मानित किए गए हैं। संगीत नाटक अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रख्यात कलाकारों और विद्वानों को जिन सम्मानों से सम्मानित किया जाता है वे प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में अत्यधिक वांछनीय सम्मान माने जाते हैं। देश में वे हजारों सस्थाएँ, जिनमें बहुत-सी सुदूर क्षेत्रों में स्थित हैं, जो संगीत, नृत्य और रंगमंच के शिक्षण या संवर्धन में कार्यरत हैं और साथ ही संबंधित विद्या शाखाओं के अनुसंधानकर्ताओं, लेखकों और प्रकाशकों को अकादेमी से वित्तीय सहायता अपने कार्यों के निष्पादन के लिए प्राप्त होती है।

अपने प्रारंभ काल से ही अकादेमी द्वारा प्रदर्शन कलओं की व्यापक रिकार्डिंग और फिल्मांकन किया गया है जिसके परिणामस्वरूप श्रव्य-दृश्य टेपों, 16-एमएम फिल्मों, फोटो चित्रों और ट्रांसपेरेंसियों का एक बड़ा अभिलेखागार बन गया है और यह भारत में प्रदर्शन कलाओं के अनुसंधानकर्ताओं के लिए एक अत्यधिक महत्वपूर्ण साधन बना हुआ है।

अकादेमी की संगीत वाद्य-दीर्घा में 600 से अधिक उद्गम स्थल के वाद्ययंत्रों का व्यापक संग्रह है और कई वर्षो से यह बहुत-कुछ प्रकाशित प्रलेखन का साधन बनी हुई है। इसी प्रकार संगीत नाटक अकादेमी की लाइब्रेरी इन विद्या शाखाओं के लेखकों, छात्रों और अनुसंधान कर्ताओं को आकर्षित करती रही है और कर रही है। अकादेमी की पत्रिका *संगीत नाटक* का प्रकाशन सन् 1965 से किया जा रहा है। यह अपने क्षेत्र की लगातार प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में से एक है जिसमें प्रख्यात लेखकों के साथ-साथ अप्रख्यात लेखकों के मौलिक कार्य को भी प्रकाशित किया जाता है।

अकादेमी प्रदर्शन कलाओं की राष्ट्रीय महत्व की संस्थाओं और परियोजनाओं की स्थापना और देखभाल भी करती है। इम्फाल में सन् 1954 में स्थापित मणिपुर नृत्य और संगीत की प्रमुख संस्था जवाहर लाल नेहरु मणिपुर नृत्य अकादेमी इन संस्थाओं में से प्रथम है। अकादेमी ने सन् 1959 में, राष्ट्रीय नाट्य स्कूल और सन् 1964 में कथक केंद्र की स्थापना की, जो दिल्ली में स्थित हैं। अकादेमी की राष्ट्रीय महत्व की चालू परियोजनाओं में सन् 1991 में शुरू की गई केरल के कूटिआट्टम थिएटर की परियोजना, सन् 1994 में शुरू की गई उड़ीसा, झारखंड और पश्चिम बंगाल की छऊ नृत्य की परियोजना और सन् 2002 में शुरू की गई असम के सत्रिय संगीत, नृत्य, रंगमंच और संबद्ध कलाओं की परियोजना प्रमुख हैं।

प्रदर्शन कलाओं में विशेषज्ञता वाले शीर्ष निकाय के रूप में, अकादेमी भारत सरकार को इस क्षेत्र से संबंधित नीतियों और परियोजनाओं को बनाने और उनके कार्यान्वयन के लिए सलाह और सहायता प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, अकादेमी भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच और भारत एवं अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संपर्कों को प्रोत्साहन देने का कार्य करके राज्य के उत्तरदायित्वों के कुछ भाग का निर्वाह करती है। अकादेमी ने हांगकांग, रोम, मोस्को, एथेंस, वाल्लाडोलिड, काहिरा और ताशकंद में प्रदर्शनियों और संगोष्ठियों का आयोजन किया है। जापान, जर्मन और रूस जैसे विदेशों के प्रमुख उत्सवों को भी अकादेमी द्वारा प्रस्तुत किया गया है चाहिए।

वर्तमान में, संगीत नाटक अकादेमी पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है और सरकार इसकी योजनाओं और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए इसका पूर्ण रूपेण वित्त पोषण करती है।

संगीत नाटक अकादेमी का प्रबंध उसकी महापरिषद में निहित है। अकादेमी के कार्यों का सामान्य अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण कार्यकारिणी मंडल द्वारा किया जाता है जिसकी सहायता के लिए वित्त समिति, अनुदान समिति, प्रकाशन समिति और अन्य सलाहकार समितियाँ यथा संगीत, नृत्य, रंगमंच, प्रलेखन और अभिलेखागार आदि हैं।

अकादेमी के उद्देश्यों का और अधिक विस्तृत उल्लेख अकादेमी के संगम-ज्ञापन (उद्धरण : परिशिष्ट-I) में किया गया है। महापरिषद, कार्यकारिणी मंडल और अन्य समितियों के सदस्यों की सूची परिशिष्ट-II में दी गई है।

संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. भूपेन हजारिका के कार्यकाल की अवधि 6 दिसंबर , 2003 को समाप्त हो गई। भारत के राष्ट्रपति ने 19 दिसंबर, 2003 को पाँच वर्ष की अवधि के लिए श्रीमती सोनल मानसिंह को अकादेमी का अध्यक्ष नियुक्त किया। उपाध्यक्ष श्री श्यामानंद जालान हैं।

अकादेमी के सचिव और प्रधान कार्यकारी श्री जयंत कस्तुआर हैं। उनकी सहायता के लिए संगीत, नृत्य, नाटक, समन्वय, वित्त, प्रशासन, प्रकाशन, प्रलेखन, फिल्म के उपसचिवों के साथ अकादेमी के पुस्तकालयाध्यक्ष, तथा अकादेमी की घटक इकाइयों - कथक केंद्र और जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकेडमी के निदेशक हैं। इन दोनों संस्थाओं का प्रबंधन अकादेमी के कार्यकारिणी मंडल के हाथ में है और इस कार्य में उसकी सहायता के लिए इन दो घटक इकाईयों की सलाहकार समितियाँ हैं। दिल्ली स्थित रवींद्र रंगशाला अकादेमी की तीसरी घटक इकाई है जिसे अकादेमी ने वर्ष 1993 में अपने अधिकार में लिया था। इन संस्थाओं के क्रियाकलापों की रिपोर्ट प्रस्तुत रिपोर्ट में दी गई है।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान महापरिषद, कार्यकारिणी मंडल और कार्यकारिणी मंडल द्वारा गठित विभिन्न समितियों यथा - वित्त समिति, अनुदान समिति और प्रकाशन समिति की बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों की सूची परिशिष्ट-III में दी गई है।

अकादेमी ने अपने पचास वर्ष 28 जनवरी, 2003 को पूरे किए। वर्ष भर चलने वाले स्वर्ण जयंती महोत्सव कार्यक्रमों का उद्घाटन दिल्ली में भारत के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने किया।

संगीत नाटक अकादेमी सम्मान 2003

29 नवंबर, 2003 को अकादेमी की महापरिषद की चेन्नई में बैठक हुई। इसमें वर्ष 2003 के लिए अकादेमी सम्मान के लिए प्रदर्शन कलाओं में 33 प्रख्यात कलाकारों का चयन किया गया। संगीत नाटक अकादेमी के सम्मान के लिए प्रत्येक को 50,000 रुपए नकद, एक शाल और एक तामपत्र प्रदान किया जाता है। वर्ष 2003 के सम्मान प्राप्त कलाकरों के नाम निम्न प्रकार हैं :

सम्मान

संगीत

गुलाम मुस्तफा वारिस खान
यशवंत बालकृष्ण जोशी
अरविंद नटवरलाल पारिख
भवानी शंकर कथक
ट्रिच्चूर वैद्यनाथ रामचंद्रन
एम. ए. नरसिम्हाचार
ए. कन्याकुमारी
कादरी गोपाल नाथ
सी. के. बालगोपालन

नृत्य

सी. के. बालगोपालन
सुनयना हज़ारी लाल
उर्मिला नागर
सदनम पी. वी. बालकृष्णन
सूर्यमूखी देवी
कलावती देवी
के. उमा रामाराव
हरे कृष्ण बेहेरा

रंगमंच

अरूण शर्मा
रत्नाकर रामकृष्ण मतकरी
देवेंद्र राज अंकुर
नीलम मानसिंह चौधरी
शाँओली मित्र
सि.आर. सिम्हा
श्रीनिवास जी. कप्पंणा
अनंत गोपाल शिन्दे

पारंपरिक/लोक/जनजातीय नृत्य, संगीत, रंगमंच एवं पुतुल नाट्य

लाइश्रम बीरेंद्रकुमार सिंह
प्रभात शर्मा
लीला ओम चेरी
चुक्का सत्तय्य
भालचंद्र व्यंकटेश पेंढारकर
बनमाली महारणा
पूरण भाट
कोषकांत देवगोस्वामी

प्रदर्शनकलाओं में छात्रवृत्ति/समग्र योगदान

पी. वी. सुब्रहमण्यम (सुबुड्डू)

अकादेमी रत्नसदस्यता एवं अकादेमी पुरस्कार 2002

अकादेमी सम्मान समारोह 2002 महाराष्ट्र सरकार के सांस्कृतिक कार्य विभाग एवं नेहरु सैन्टर के सहयोग से मुम्बई में 6 जुलाई 2003 को आयोजित किया गया। 25 मार्च 2003 को अकादेमी की महापरिषद ने श्रीमती शन्नो खुराना और श्री कावालम नारायण पणिक्कर को अकादेमी का रत्नसदस्य चुना एवं 26 कलाकारों का अकादेमी पुरस्कार 2002 के लिए चयन किया। अकादेमी रत्नसदस्यता एवं पुरस्कार 2002 भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा एक विशिष्ट समारोह में प्रदान किए गए। इस अवसर पर महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री मोहम्मद फज़ल, केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री जगमोहन, महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री श्री छगन भुजवल, संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. भूपेन हज़ारिका एवं उपाध्यक्ष श्री श्यामानन्द जालान और महाराष्ट्र सरकार के सांस्कृतिक कार्य, परिवहन, पत्तन, नयाचार मंत्री श्री अशोक चहवान, भी उपस्थित थे। इस शुभ अवसर पर संगीत नाटक अकादेमी के सचिव श्री जयन्त कस्तुआर द्वारा अभिकल्पित संगीत एवं नृत्य का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, इसके अतिरिक्त मुम्बई नगर के शारीरिक रूप से असहाय बच्चों द्वारा भी एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

प्रदर्शनी / महोत्सव

स्वर्ण जयंती समारोहों के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम

वाद्य दर्शनः ऐलिग्जैंड्रिया और काहिरा, मिस्र में वाद्य-यंत्रों की प्रदर्शनी

संगीत नाटक अकादेमी के स्वर्ण जयंती समारोहों के अवसर पर वाद्य-यंत्रों और व्याख्यान-निदर्शन की प्रदर्शनी 'वाद्य दर्शन' का आयोजन 22-26 मार्च, 2003 को ऐलिग्जैंड्रिया, मिस्र में भारत सांस्कृतिक संबंध परिषद्, मौलाना आजाद भारतीय संस्कृति केंद्र, काहिरा राजदूतावास, तथा बिब्लिओथीक ऐलिग्जैंड्रिया के सहयोग से किया गया था। बिब्लिओथीक ऐलिग्जैंड्रिया में एक विश्व विख्यात लाइब्रेरी है और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र होने के कारण यहाँ पर अनन्य रूप से 70 संगीत वाद्य-यंत्रों को प्रदर्शित किया गया था। इन्हें देखने के लिए यहाँ बड़ी संख्या में दर्शक आए। मिस्र के विभिन्न भागों के स्कूली बच्चे और यूरोपियाई देशों से आगन्तुक पर्याप्त संख्या में प्रदर्शनी देखने आए।

प्रदर्शनी का उद्घाटन 22 मार्च, 2003 को बिब्लिओथीक के निदेशक ने किया जहाँ प्रख्यात सरोद वादक श्री तेजेंद्र नारायण, वाद्ययंत्रों के निर्माता और तबला वादक ने अतिथियों को वाद्य-यंत्रों के इतिहास के बारे में अवगत कराया। प्रदर्शनी को कलात्मक डिजाइनर श्री वेद पहोजा ने तैयार किया था। प्रदर्शनी में लगभग 3000 दर्शक आए। प्रदर्शनी खुलने का समय प्रातः 11.00 बजे से सायं 5.30 बजे तक था। प्रदर्शनी के एक भाग के रूप में, बिब्लिओथीक भवन में एक सजीव प्रदर्शन का आयोजन किया गया और तत्पश्चात् 27 मार्च, 2003 को कार्बन ब्लैक फैक्टरी के परिसर में एक आधे घंटे के प्रदर्शन का आयोजन फैक्टरी में कार्यरत भारतीय अप्रवासियों के लाभ के लिए किया गया। भारतीय समुदाय ने तबले की संगत के साथ सरोद वादन का आनन्द उठाया।

काहिरा में प्रदर्शनी का आयोजन 1 से 9 अप्रैल, 2003 तक म्यूज़िक ओपेरा हाउस कॉम्प्लेक्स की लाइब्रेरी के गोल भवन में किया गया था। महामहिम श्री सतनाम सिंह, काहिरा में भारत के राजदूत ने 1 अप्रैल, 2003 को दीप प्रज्वलित करके प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रतिष्ठित व्यक्ति और राजदूतावास का स्टाफ भारी संख्या में उपस्थित था। अपने उद्घाटन भाषण में महामहिम ने संगीत नाटक अकादेमी और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा ऐसी प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए बधाई दी। 4 अप्रैल, 2003 तक सरोद और तबला वादन के सजीव प्रदर्शन संगीत प्रेमियों को आकर्षित करते रहे और तत्पश्चात् सितार और तबला वादन ने दर्शकों का मनोरंजन किया। प्रदर्शनी 2 से 9 अप्रैल, 2003 तक प्रातः 10.30 बजे से सायं 8.30 बजे तक खुली रहती थी। प्रदर्शन लोकल म्यूजिक स्कूल और स्वेज़ क्लब में क्रमशः 3 और 4 अप्रैल, 2003 को आयोजित किए गए थे। सभी दिनों पर औसतन 250 से अधिक दर्शक आए। संगीत प्रेमियों ने प्रदर्शनी को सराहा और मिस्री वाद्य-यंत्रों से समानता करते हुए यह अनुभव किया कि ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम बारंबार आयोजित करने से देशों के बीच परस्पर सांस्कृतियों को समझने में सहायता मिलेगी।

मिस्र गई टीम में श्री जे.पी. बेंगेरी, पुस्तकालयध्यक्ष, सं. ना.अ. और दल नेता; श्री वेद पहोजा, कलात्मक डिजाइनर; कोलकाता से श्री तेजेंद्र नारायण, सरोद वादक; श्री संजय शर्मा, वाद्य-यंत्र निर्माता, दिल्ली शामिल थे। प्रेस और मीडिया के माध्यम से प्रदर्शनी को अत्यधिक प्रचार मिला। प्रदर्शनी की कवरेज को कुछ स्थानीय टेलिवीज़न चैनलों पर प्रसारित किया गया था।

उजबेकिस्तान में भारतीय संगीत वाद्य-यंत्रों की प्रदर्शनी

ताशकंत, उजबेकिस्तान में 21-30 अप्रैल, 2003 तक प्रदर्शनी का आयोजन उजबेकिस्तान स्टेट कंर्सवटाअर ताशकंत में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय राजदूतावास, ताशकंत, सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय, रिपब्लिक ऑफ उजबेकिस्तान और उजबेकिस्तान स्टेट कंसर्वटाअर के सहयोग से किया गया था। संगीत नाटक अकादेमी की सुश्री शर्बरी मुखर्जी, उपसचिव (संगीत) ने इस प्रदर्शनी में अकादेमी का प्रतिनिधित्व किया।

प्रदर्शनी में संगीत नाटक अकादेमी के पूरे देश के 600 वाद्य-यंत्रों के संग्रह में से एक छोटे भाग को प्रदर्शित किया गया था जिससे प्रदर्शनी में भारतीय संगीत वाद्य-यंत्रों की विविधता की झलक मिली।

प्रदर्शनी में भारत के विभिन्न भागों के 70 शास्त्रीय और लोक संगीत वाद्य-यंत्रों को फोटोग्राफ और विवरणों के साथ प्रदर्शित किया गया था। इस प्रदर्शनी के लिए संगीत वाद्य-यंत्र संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली के संग्रह से लिए गए थे। जिन्हें मेड्रिड (स्पेन), काहिरा और ऐलिग्जैंड्रिया (मिस्र में) में, प्रदर्शित किया गया।

डॉ. (श्रीमती) सुनीरा कासलीवाल, सितार वादक और संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर, इम्फाल के रचनाकार और संगीतज्ञ श्री टिकेन सिंह, वाद्य-यंत्र निर्माता श्री राजेश थवन और संस्थापन कलाकार श्री कैलाश जीवनी ताशकंत जाने वाले प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे।

डॉ. सुनीरा कासलीवाल और श्री टिकेन सिंह ने सितार, पुंग, खौंग, पेना और अन्य वाद्य यंत्रों पर व्याख्यान- निदर्शन दिए और लगभग 20 स्कूलों के बच्चों के साथ अन्योन्यक्रिया की। उन्होंने संगीत के वरिष्ठ छात्रों के लिए उजबेकिस्तान स्टेट कंसॅर्वटवाअर में मास्टर कक्षाओं का आयोजन किया। श्री राजेश धवन ने प्रदर्शनी स्थल पर रोजाना वाद्य-यंत्र निर्माण प्रक्रियाओं का प्रदर्शन किया और संगीत, वाद्ययंत्र निर्माण में रुचि रखने वाले छात्रों और सामान्य जनता से अन्योन्यक्रिया की।

प्रदर्शनी के समापन पर एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया जिसमें भारतीय कलाकारों के साथ ताशकंत में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के उस्ताद इल्मस हुसैन खान(तबला वादक) ने उजबेक पीपुल्स फॉक एन्सेम्बल "सोगदिआना" के कलाकारों के साथ संयुक्त संगीत-गोष्ठी में तबला वादन किया।

समापन सत्र में उजबेकिस्तान में भारत के राजदूत महामहिम श्री शरत सब्बरवाल ने उजबेकिस्तान स्टेट कंसॅर्वटवाअर को 10 भारतीय वाद्य-यंत्रों का सेट उपहार स्वरूप दिया। वाद्य-यंत्रों को स्टेट कंसॅर्वटवाअर के रेक्टर प्रो. के.टी. एजीमोव ने प्राप्त किया।

बड़े गुलाम अली खान शताब्दी समारोह : स्मारक डाक टिकट का विमोचन

1962 में संगीत नाटक अकादेमी के हिंदुस्तानी गायन सम्मान से सम्मानित और 1967 में अकादेमी रत्न सदस्यता से विभूषित उस्ताद बड़े गुलाम अली खान की शताब्दी मनाने के लिए स्मारक डाक टिकट के विमोचन के अवसर पर एक समारोह का आयोजन 30 जून, 2003 को कन्वेशन हाल, अशोक होटल, नई दिल्ली में किया गया था। इस समारोह का आयोजन संस्कृति विभाग, पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया गया था। डाक टिकट श्री अरुण शौरी, माननीय संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री द्वारा जारी किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री जग मोहन, माननीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री द्वारा की गई। इस समारोह के दौरान श्रीमती मालती गिलानी और श्रीमती कुर्तुलेन हैदर द्वारा लिखित "उस्ताद बड़े गुलाम अली खान : उनका जीवन और संगीत" नामक पुस्तक का औपचारिक विमोचन भी श्री जगमोहन द्वारा किया गया था।

इस अवसर पर संगीत नाटक अकादेमी द्वारा उस्ताद बड़े गुलाम अली खान के तीन पौत्रों, यथा उस्ताद मजहर अली खान, उस्ताद जावेद अली खान और उस्ताद रजा अली खान के हिंदुस्तानी गायन को प्रस्तुत किया गया था। ये तीनों कसूर-पटियाला घराने से हैं।

उस्ताद बड़े गुलाम अली खान की स्मृति में डाक विभाग द्वारी जारी स्मारक डाक टिकट 2.90x3.91 सें. मी. आकार में और पाँच रुपये मूल्यवर्ग का है। डाक टिकट में खान साहब को सुरमंडल हाथ में लिए चित्रित किया गया है। मुद्रित टिकटों की संख्या 4 लाख है।

रंग स्वर्ण
गोल्डन जुबली थिएटर फेस्टिवल, दिल्ली

रंग स्वर्ण - स्वर्ण जयंती रंग महोत्सव की कल्पना और उद्देश्य भारतीय रंगमंच के व्यापक प्रतिबिंब को इसके समस्त प्रकारों और रूपों में प्रदर्शित करना था ताकि इसकी वर्तमान स्थिति का और इस क्षेत्र में अकादेमी के योगदान का मूल्यांकन किया जा सके। इसकी योजना विभिन्न भागों में देश में प्रचलित रंगमंच की पद्धतियों के सभी पक्षों को सम्मिलित करना था, यथा (1) रंगमंच प्रदर्शन, (2) अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, (3) प्रदर्शनी रंग रेखा, (4) खुला मंच और अन्य अन्योन्यक्रिया कार्यक्रम, और (5) प्रकाशन।

महोत्सव का उद्घाटन 9 अक्तूबर, 2003 को कमानी ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में अकादेमी के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. भूपेन हजारिका द्वारा अकादेमी के चार रत्न सदस्यों - श्री गिरीश कर्नाड, श्री हबीब तनवीर, श्री विजय तेंडुलकर और कावालम नारायण पणिक्कर के साथ दीप प्रज्वलित करके किया गया था। उद्घाटन के पश्चात् श्री के. एन. पणिक्कर द्वारा निर्देशित संस्कृत नाटक 'कर्णभारम्' प्रस्तुत किया गया था।

इस उत्सव में पूरे भारत के साथ-साथ विश्व के अन्य भागों से रंगकर्मियों ने भाग लिया।

नाट्य प्रदर्शन

प्रदर्शन चार वर्गों के थेः (1) आलोचकों की पसंद, (2) मास्टर प्रदर्शनकर्ता, (3) परंपरागत रंगमंच, और (4) दिल्ली रंगमंच। आलोचकों की पसंद खंड में 20 नाटकों का चयन करके उन्हें प्रस्तुत किया गया था। ये नाटक कमानी ऑडिटोरियम, श्री राम सेंटर ऑडिटोरियम और शहर के अन्य सभागारों में प्रस्तुत किए गए थे। मास्टर प्रदर्शनकर्ता खंड में भारतीय रंगमंच के 20 मास्टर अभिनेताओं को कमानी ऑडिटोरियम और श्री राम सेंटर ऑडिटोरियम में प्रस्तुत किया गया था। परंपरागत रंगमंच खंड में छः प्रमुख परंपरा रंगमंच रूपों को यथा केरल का कूटियाट्टम, उड़ीसा का प्रह्लाद नाटक, कर्नाटक का यक्षगान, तमिलनाडु का तेरूकूतू, हरियाणा का सांग और बिहार का नटुआ नाच मेघदूत एम्फी थिएटर, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में प्रस्तुत किया गया था। दिल्ली रंगमंच खंड में दिल्ली स्थित ग्रुपों दूवारा सात महत्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ दिल्ली के बाहर के स्थान में प्रस्तुत की गई थीं।

मास्टर प्रदर्शनकर्ता : लोकप्रिय रुचि के दृष्टिकोण से मास्टर अभिनेता/निर्देशक के नेतृत्व में दस उच्च गुणवत्ता रंगमंच प्रदर्शनों/कार्यक्रमों को चुना गया था। इसमें कुछेक महान अभिनेताओं के दृश्यों की उन प्रस्तुतियों को सम्मिलित किया गया था जिनसे दर्शकगण उन प्रस्तुतियों का आनंद उठा सके जो अब प्रचलन में नहीं हैं।

आलोचकों की पसंद : इस भाग में वे 15 प्रस्तुतियाँ सम्मिलित हैं जिनका चयन पूरे भारत से विद्वानों/आलोचकों और रंगमंच विशेषज्ञों से प्राप्त सिफारिशों के आधार पर किया गया था। अकादेमी ने क्षेत्रीय आधार पर चयन समितियों की नियुक्ति की थी ताकि वे भारतीय शहरी रंगमंच की सर्वोत्तम समझी जाने वाली और अपने क्षेत्रों से संबंधित महत्वपूर्ण समझी जाने वाली उच्च गुणवत्ता वाली प्रचलित प्रस्तुतियों की सिफारिश करें। एक दो-सदस्यीय विशेषज्ञ टीम ने विभिन्न शहरों का दौरा करके प्रस्तुतियों को देखा/समूहों से मिले और उसके आधार पर उन्होंने एक संक्षिप्त सूची तैयार की। तत्पश्चात् इस पर विचार-विमर्श संगीत नाटक अकादेमी की रंग स्वर्ण समिति ने अंतिम चयन करने के लिए किया।

परंपरागत रंगमंच : परंपरागत रूप जैसे कूटियाट्टम, प्रह्लाद नाटक, ख्याल, यक्षगान, तेरुकूतु, नटुआ नाच और सांग की प्रस्तुतियाँ देर शाम को रवींद्र भवन में संगीत नाटक अकादेमी के मेघदूत थिएटर कॉम्प्लेक्स में प्रस्तुत की गई थीं।

दिल्ली रंगमंच : व्यापक दर्शकगणों तक पहुँचाने के लिए दिल्ली स्थित समूहों दूवारा चुनिंदा प्रस्तुतियों को मंडी हाउस के बाहर के स्थानों पर प्रस्तुत किया गया था। यह नाटक अत्यधिक लोकप्रिय साबित हुए और नए दर्शकगणों ने इसे अत्यधिक सराहा।

कार्यक्रम का विवरण इस प्रकार है :

9 अक्तूबर
उद्घाटन
कर्णभारम् (संस्कृत)
नाटककार और निर्देशक : **कावालम नारायण पणिक्कर, केरल**

10 अक्तूबर
चरन दास चोर (छत्तीसगढ़)
नाटककार और निर्देशक : **हबीब** तनवीर; नया थिएटर, **भोपाल**

11 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
श्रीराम लागू, मित्र (मराठी) के दृश्यों में; निर्देशक : विजय **केंकरे, सुयोग,** मुंबई

12 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
श्यामानंद जालान, आधे-अधूरे/एवं इंद्रजीत (हिंदी) के दृश्यों में, **कोलकाता**

अमरीश लाल पुरी, डेढ़ इंच ऊपर (हिंदी) के दृश्यों में, मुंबई

13 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
सावित्री हैसनम, वाइल्ड वोमेन (मणिपुरी) के दृश्यों में, इम्फाल

सत्यदेव दुबे
इंशा अल्लाह (हिंदी) के दृश्यों में, मुंबई

प्रभाकर वी. पंशीकर
ओशालाल मृत्यु और अशरूणची झाली फुले (मराठी) **के दृश्यों में, मुंबई**

14 अक्तूबर
नसीरुद्दीन शाह, डियर लायर (अंग्रेजी) **नाटक** में

15 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
जोहरा सेगल, 5 नाटक (उर्दू/हिंदी) दिल्ली **के स्निपटों से**

दामोदर काशीनाथ केंकरे
रंगकर्मी (मराठी) के दृश्यों से, मुंबई

16 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
एलीक पद्मसी, डेथ ऑफ ए सेल्समैन (अंग्रेजी) के **दृश्यों से, मुंबई**

मनोज मित्रा
सजानो बागन (बंगला) के दृश्यों से, कोलकाता

कुमार राय, गैलिलिओ (बंगला) के दृश्यों से, कोल**काता**

17 अक्तूबर
जात ही पूछो साधु की (हिंदी)
नाटककार : विजय तेंडुलकर, **निर्देशक : राजिंदर नाथ, अभियान, नई दिल्ली**

18 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
बी. जयश्री, चित्रपट् और उरिया उयाले (कन्नड) के दृश्यों से, **बंगलौर**

आर. नागरत्नम्मा, कंस वध (कन्नड) के दृश्यों में, बंगलौर

19 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
सुहास जोशी, स्मृति चित्रे (मराठी) के दृश्यो से, मुंबई

भरत मुराली, लंका लक्ष्म (मलयालम)दृश्यों से, तिरुवनंतपुरम

20 अक्तूबर
अनुपम खेर, कुछ भी हो सकता है (हिंदी) नाटक में; निर्देशक : **फिरोज** खान, मुंबई

21 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
मोहन अगाशे, घासी राम कोतवाल (मराठी) के दृश्यों में, **पुणे**

सावित्री चटर्जी, श्रुति (बंगाली) के दृश्यों में, कोलकाता

22 अक्तूबर
उत्तर प्रियदर्शी (मणिपुर)
निर्देशक : रतन थियम, कोरस रेपर्टरी थिएटर, इम्फाल

श्री राम सेंटर में आयोजित प्रदर्शन
10 अक्तूबर
महादेव भाई (1892-1942) अंग्रेजी
आलेख और निर्देशक : रामू रामनाथन; समूह : व**किंग** टाइटल, मुंबई

11 अक्तूबर
मयोल हुनद्राबा योन्निंग (मणिपुरी)
आलेख और निर्देशक : एम. सी. तोयबा; समूह : **बनियान** रेपर्टरी थिएटर, इम्फाल

12 अक्तूबर
कथा (उड़िया)
आलेख और निर्देशक **: सुबोध पट्टनायक; समूह : नाट्य चेतना,** भुवनेश्वर

13 अक्तूबर
किचन कथा (पंजाबी)
आलेख : सुरजीत पतार; **निर्देशक : नीलम मानसिंह चौधरी; समूह : द्** कंपनी थिएटर, चंडीगढ़

14 अक्तूबर
माता हिडिम्बा (मराठी)
आलेख और निर्देशक : चेत**न दतार; समूह** : लास्या, मुंबई

15 अक्तूबर
धर्मदुरंत (कन्नड़); निर्देशक : एस रघुनंदन

16 अक्तूबर
अनुरव (गुजराती); आलेख एवं निर्देशक : कपिलदेव चंद्रकांत शुक्ला; समूहः आख्य आर्ट्स, सूरत

17 अक्तूबर
सिद्धार्थ (मलयालम)
आलेख : दीपन सी.एस.; निर्देशक : ज्योतिष एम.जी.; समूह : अभिनय, केरल

18 अक्तूबर
काशीनामा (हिंदी)
आलेख और निर्देशक : उषा गांगुली; समूह : रंगकर्मी, कोलकाता

19 अक्तूबर
जात्रा (असमिया)
आलेख और निर्देशक : बहरूल इस्लाम; समूह : सीगल, गुवाहाटी

20 अक्तूबर
तिराइकडालोडी (तमिल)
आलेख : प्रो. एस. रामानुजम; निर्देशक : प्रसन्न रामास्वामी; समूह : पातिनी, चैन्नई

21 अक्तूबर
सोजोन बदियार घाट (बंगाली)
रुद्र प्रसाद सेन गुप्ता को प्रदर्शित करते हुए; आलेख : पोइट जासीमुद्दीन
निर्देशक : गौतम हलदर; समूह : नंदीकार, कोलकाता

22 अक्तूबर
नाटक में अभिनेता
सीमा विस्वास, कैदे-हयात में (उर्दू); आलेख : सुरेंद्र वर्मा; निर्देशक : राम गोपाल बजाज

अन्य स्थानों पर प्रदर्शन : 'एअरफोर्स ऑडिटोरियम'
15 अक्तूबर
अन्वेषक (हिंदी)
नाटककार : प्रताप सहगल; निर्देशक : सतीश आनंद; सा**हित्य कला** परिषद रेपर्टरी, दिल्ली

हिंदू कालेज
17 अक्तूबर
महाब्राह्मण (हिंदी)
निर्देशक : मुश्ताक काक; श्रीराम **सेंटर रेपर्टरी, दिल्ली**

बी. सी. पाल ऑडिटोरियम
18 अक्तूबर
ऐजूकेटिंग रीता (अंग्रेजी); निर्देशक : जॉय माइकेल यात्रिक, दिल्ली

आईआईटी ऑडिटोरियम
19 अक्तूबर
'अनटाइटल्ड' (अंग्रजी/हिंदी)
निर्देशक : अरविंद गौढ़; अस्मिता, **दिल्ली**

बी. सी. पाल ऑडिटोरियम
20 अक्तूबर
'द एंटीगोन प्रोजेक्ट (अंग्रेजी)
निर्देशक : अनुराधा कपूर

21 अक्तूबर
'और कितने टुकड़े' (हिंदी)
निर्देशक : कीर्ति जैन; अरंजन : **दिल्ली**

विवेकानंद कालेज
22 अक्तूबर
'जानेमन (हिंदी)
निर्देशक : वामन केंद्रे; एनएसडी रेपर्टरी कं., दिल्ली; मेघदूत कॉम्प्लेक्स में परंपरागत रंगमंच के प्रदर्शन

10 अक्तूबर
कूटियाट्टम (केरल)
मार्गी, तिरुवनंतपुरम

11 अक्तूबर
प्रह्लाद नाटक (उड़ीसा)
कृष्ण चंद्र साहू एवं पार्टी, **गंजम**

12 अक्तूबर
ख्याल (राजस्थान)
बंसी लाल खिलाड़ी एवं पार्टी, **जोधपुर**

13 अक्तूबर
यक्षगान (कर्नाटक)
श्री ईदागुंजी महागणपति यक्षगान मंडल केरेमेने हूनावर

14 अक्तूबर
तेरूक्कूत्तु (तमिलनाडु)
परमबरै तेरूक्कूत्तु मनरम, चैन्नई

15 अक्तूबर
सांग (हरियाणा)
पंडित लक्ष्मी चंद सांग पार्टी, सोनीपत

21 अक्तूबर
माच (मध्यप्रदेश)
माल्वा नाट्य माच मंडल, उज्जैन

22 अक्तूबर
नटुआ नाच (बिहार)
बटोही, बिहार लोकवाद्य संस्थान, **सहरसा**

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
थिएटर इन द् वर्ल्ड टुडे : इन्डिविजुअल एंड कलेक्टिव विजन्स

रंग स्वर्ण के एक भाग के रूप में 'थिएटर इन द् वर्ल्ड टुडे' 'इन्डिविजुअल एंड कलेक्टिव विजन्स' एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 10-12 अक्तूबर 2003 को फिक्की कान्फ्रेंस कक्ष में किया गया था। संगोष्ठी का आयोजन इंटरनेशनल थिएटर इंस्टीट्यूट (यूनेस्को) और इसके भारतीय केंद्र आईटीआई के संयुक्त सहयोग से किया गया था। आईटीआई ने यूरोप, एशिया और अफ्रीका से 10 अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ बुलाने में सहायता की। श्री रेवती शरण शर्मा ने आईटीआई की ओर से अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ समन्वय किया। विशेषज्ञों ने यात्रा लागत का वहन स्वयं किया और अकादेमी ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की सहायता से उन्हें भारत में ठहरने का आतिथ्य प्रदान किया। संगोष्ठी का उद्घाटन 10 अक्तूबर को डॉ. भूपेन हजारिका, अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष की स्वागत टिप्पणी, श्री श्यामानंद जालान, उपाध्यक्ष और अध्यक्ष फेस्टिवल समिति के भाषण, श्री गिरीश कर्नाड के मुख्य भाषण और श्री जयंत कस्तुआर, अकादेमी के सचिव के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

भारतीय भागीदारों में भारत के विभिन्न भागों के प्रख्यात रंगमंच कलाकार और विशेषज्ञ थे, जिसमें गिरीश कर्नाड, विजय मेहता, श्रीराम लागू और आर. रामनाथन शामिल थे। वक्ताओं के अतिरिक्त, रंगकर्मियों और छात्रों ने भी वाद-विवाद में भाग लिया, जिससे संगोष्ठी के तीनों दिन रंगमंच के विभिन्न पक्षों पर वाद-विवाद प्रेरक बना रहा। श्री रेवती शरण शर्मा और श्री अशोक वाजपेयी ने 'थिएटर इन द् वर्ल्ड टुडे' पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का संचालन किया।

संगोष्ठी में भाग लेने वालों को समृद्ध समसामयिक नाटकों के साथ-साथ परंपरागत रंगमंच देखने के अलावा भारत और विदेश दोनों के कुछ प्रमुख विद्वानों के साथ अन्योन्यक्रिया करने का अवसर मिला। संगोष्ठी का विवरण निम्न प्रकार है :

संगोष्ठी की अनुसूची :
10 अक्तूबर
पहला और दूसर सत्र : द क्वेशचन ऑफ आइडेंटिटी; पहला सत्र **अध्यक्ष** : जी. पी. देशपांडे; दूसरा सत्र अध्यक्ष : भास्कर चंदावरकर
पेपर प्रस्तुति : के. एन. पणिक्कर, तिरुवनंतपुरम; मोफिदुल हक, बांग्लादेश (अताउर रहमान द्वारा पठित); सोता शूजी, जापान; **आनंद** लाल, कोलकाता

11 अक्तूबर
तीसरा सत्र : कन्सर्न्स इन थिएटर; अध्यक्ष : जेनिफर एम वालपोल
पेपर प्रस्तुति : रुद्र प्रसाद सेन गुप्ता, कोलकाता; निसार अलाना, दिल्ली; संजना कपूर, मुंबई; योको ओकागिरी, जापान; भास्कर चंदावरकर, पुणे
चौथा सत्र : न्यू ऐस्थेटिक्स, न्यू ईडियम्स; अध्यक्ष : विजय मेहता
पेपर प्रस्तुति : वेसा तापिया वालो, फिनलैंड; अमल अलाना, दिल्ली; हाइसूक यांग, कोरिया; शांता गोखले, मुंबई; के. डी. त्रिपाठी, उज्जैन

12 अक्तूबर
पाँचवां सत्र : प्लेराइट इन द् 'वेस्टलैंड'; अध्यक्ष : शांता गोखले
पेपर प्रस्तुति : आर. रामानाथन, मुंबई; सतीश आलेकर, पुणे; महेश अलकुंचार, नागपुर; अभि सुबेदी, नेपाल; एस. रघुनंदन, बंगलौर; जी.पी. देशपांडे
छठा सत्र : ऐक्टर टुडे; अध्यक्ष : विजय मेहता
पेपर प्रस्तुति : कोर्नेलियू दुमित्रियू, रोमानिया; श्रीराम लागू, पुणे; कीर्ति जैन, दिल्ली; कोजर, रोमानिया पर; देवेंद्र राज अंकुर, दिल्ली; विजय मेहता, मुबंई; मोहन महर्षि, चंडीगढ़; अताउर रहमान, बांग्लादेश

सत्रों की रिपोर्टें श्री आनंद लाल, श्री केवल अरोड़ा, सुश्री संगीतिका निगम, श्री विजय केंकरे और श्री जे. एन. कौशल द्वारा तैयार की गई थीं।

रंग रेखा : अकादेमी के अभिलेखागार से फोटोचित्रों की प्रदर्शनी

इस अवसर पर, संगीत नाटक अकादेमी के अभिलेखागार से भारतीय रंगमंच पर फोटो सामग्री की प्रदर्शनी भी 18-31 अक्तूबर 2003 को अकादेमी की मेघदूत दीर्घा, नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। इसका उद्देश्य अकादेमी के पिछले 50 वर्षों का विवरण और इसकी उन बहुविध गतिविधियों को उजागर करना था जिन्होंने भारत में रंगमंच के विकास में योगदान किया है जिसमें राष्ट्रीय नाट्य स्कूल की स्थापना भी शामिल है। अकादमी की पूर्व सचिव श्रीमती उषा मालिक द्वारा संग्रह की गई यह प्रदर्शनी एक महत्वपूर्ण प्रलेखन उपयोग की और अनुसंधानकर्ताओं और मीडिया के लिए अत्यधिक रुचिकर साबित हुई है।

ओपन प्लेटफार्म

व्यावसायिक रंगकर्मी एक-दूसरे के साथ आदान-प्रदान कर सकें इस उद्देश्य से प्रातः काल में कार्यशालाओं, वाद-विवादों और प्रदर्शनों की श्रृंखलाओं की व्यवस्था की गई थी। आमंत्रित विशेषज्ञों को खुला मंच प्रदान किया गया था ताकि वे अपने समसामयिकों और नाटक-छात्रों के साथ अपने विचारों और सूचना का आदान-प्रदान कर सकें। इन सत्रों की अनौपचारिक प्रकृति और मेघदूत थिएटर के खुले स्थान की भागीदारों ने और प्रस्तुतिकर्ताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम का विवरण निम्न है :

13 अक्तूबर
वार्ता : सम रिफ्लेक्शन ऑन मॉडर्न थिएटर इन मणिपुर
एम सी तोइबा और बुद्ध चिंगथम, बनियन रेपर्टरी थिएटर, इम्फाल द्वारा

14 अक्तूबर
निदर्शन-व-कार्यशाला : द् क्लाउड एंड द् इनर स्पेस ऑफ हार्ट
कन्हाई लाल और सावित्री हैसनम द्वारा

15 अक्तूबर
थिएटर वर्कशाप : हबीब तनवीर, नया थिएटर, भोपाल

16 अक्तूबर
रंग-नृत्य पर कार्यशाला : राजश्री शिरके, वैभव अरेकर और चेतन दतार, लास्य, मुंबई द्वारा

18 अक्तूबर
एट प्ले-ए-थ्री-स्क्रीन वीडियो स्क्रीनिंग : लूसिया किंग और स्मिता भारती, नई दिल्ली द्वारा

19 अक्तूबर
चिल्ड्रंस थिएटर वर्कशाप : नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामास टीआईई ग्रुप नई दिल्ली द्वारा

मोनोग्राफ

स्वर्ण जयंती के अवसर का भारतीय रंगमंच के कुछ महान उत्कृष्ट कलाकारों की मोनोग्राफ श्रृंखला प्रकाशित करने के समर्थन के लिए काल्पनिक इस्तेमाल किया गया। इससे भारतीय रंग कर्मियों के कार्य की सूचना और प्रलेखन की चिरकालिक आवश्यकता की पूर्ति हुई है। महोत्सव में प्रदर्शन के लिए आमंत्रित उत्कृष्ट कलाकारों को प्रकाशन निकालने के लिए अनुदान प्रदान करने का प्रस्ताव किया गया। अकादेमी ने निम्नलिखित प्रतिष्ठित कलाकारों पर 12 मोनोग्राफ जारी किए:
श्री कावालम नारायण पणिक्कर, श्री श्रीराम लागू, श्री श्यामानंद जालान, श्रीमती साबित्री हैसनम एवं श्री एच. कन्हाई लाल, श्री प्रभाकर वी. पंशीकर, श्री दामोदर काशीनाथ केंकरे, श्री मनोज मित्रा, श्री कुमार राय, श्री राजिन्दर नाथ, श्रीमती आर. नागरत्नम्मा, श्री मोहन अगाशे, श्री राम गोपाल बजाज

ये प्रकाशन सं. ना. अ. की लाइब्रेरी और अभिलेखागार में जोड़ दिए गए हैं और ये भारत और विदेशों के रंगमंच

विद्वानों और छात्रों के लिए संदर्भ और अनुसंधान के लिए उपयोगी होंगे।

संगीत स्वर्ण

संगीत नाटक अकादेमी ने स्वर्ण जयंती समारोह के एक भाग के रूप में 'संगीत स्वर्ण' प्रस्तुत किया। इसका आयोजन रवींद्र भारती ऑडिटोरियम, हैदराबाद में संस्कृति विभाग, आंध्र प्रदेश सरकार के सहयोग से किया गया था। इस संगीतोत्सव ने कर्नाटक और हिंदुस्तानी दोनों भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परंपराओं को उजागर किया। आंध्र प्रदेश के राज्यपाल, श्री सुरजीत सिंह बरनाला ने 29 अक्तूबर, 2003 को सायं 6.30 बजे उत्सव का उद्‌घाटन किया। संयोगवश एफ्रो-एशियाई खेल भी हैदराबाद शहर में इस उत्सव के साथ हुए। इस 5 दिवसीय लंबे उत्सव में भारतीय शास्त्रीय संगीत के देदीप्यमान विद्वानों ने भाग लिया यथा डॉ. एम. बाल मुरली कृष्ण, संगीत नाटक अकादेमी के रत्न सदस्य पंडित हरि प्रसाद चौरसिया, प्रतिष्ठित बाँसुरी वादक और अकादेमी सम्मान से सम्मानित (1983); श्रीमती मालिनी राजुरकर, हैराबाद की विख्यात गायिका और अकादेमी सम्मान से सम्मानित (2001); पं. विश्व मोहन भट्ट, प्रतिष्ठित मोहनवीणा वादक और अकादेमी सम्मान से सम्मानित (1998); श्री डी. के. दतार, उत्कृष्ट हिंदुस्तानी वायलन वादक और अकादेमी सम्मान से सम्मानित (1995); उस्ताद शमीम अहमद खान, प्रतिष्ठित सितारवादक और आकदेमी सम्मान से सम्मानित (1994) और इनके साथ अन्य बहुत-से गायन और वाद्य-यंत्र में प्रवीण कलाकार उपस्थित थे।

इस अवसर पर अकादेमी ने ऐसे वाद्य-यंत्रों को प्रस्तुत किया जो कि बहुत प्रसिद्ध नहीं है जैसे - रुद्र वीणा, जिसे श्री असित कुमार बनर्जी ने प्रस्तुत किया और सितार तथा शहनाई की असाधारण जुगलबंदी, जिसे कोलकाता के दो वादकों-श्री कीर्ति खान और श्री गौहर अलीखान ने प्रस्तुत किया। उत्सव का प्रारंभ तिरुपति श्री सत्यनारायण और उनके समूह ने नागस्वरम् गायन से किया जबकि दिल्ली की एक और गायिका श्रीमती सुमित्रा गुहा ने हिंदुस्तानी गायन संगीत प्रस्तुत किया। उत्सव के दौरान श्री ट्रिच्चूर वी. रामचन्द्रन, प्रतिष्ठित कर्नाटक गायक, श्री विनायक तोरवी, हिंदुस्तानी गायक और युवा पीढ़ी के तीन संगीतज्ञों श्री कमाल साबरी (सारंगी), श्रीमती माला चंद्रशेखर (कर्नाटक बाँसुरी) और श्रीमती मंजरी असनारे केलकर (हिंदुस्तानी गायन) को भी प्रस्तुत किया गया था। 2 नवंबर, 2003 को रविवार प्रातःकाल सत्र का आयोजन किया गया जिसमें कर्नाटक वीणा और धारवाड़ के वरिष्ठ गायक श्री पंचाक्षरी स्वामी मट्टी गाट्टी को प्रस्तुत किया गया था जिन्होंने विशेष सत्र में प्रातःकालीन रागों का अलाप किया। ठुमरी और गजल दिल्ली की श्रीमती शांति हीरानंद ने प्रस्तुत की।

संगीत नाटक अकादेमी के अभिलेखागार के लिए पूरे कार्यक्रम का प्रलेखन किया गया था।

डेज ऑफ रशियन कल्चर इन इंडिया

दिल्ली, मुंबई और कोलकाता
1-8 नवंबर, 2003
स्वर्ण जयंती के एक भाग के रूप में, संगीत नाटक अकादेमी ने संस्कृति विभाग, भारत सरकार, रशियन फेडरेशन संस्कृति मंत्रालय और नई दिल्ली, मुंबई और कोलकाता में भारत में रशियन फेडरेशन के दूतावास द्वारा प्रायोजित 'डेज ऑफ रशियन कल्चर' की प्रस्तुतियों का समन्वय किया। इसका उद्‌घाटन सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में 1 नवंबर, 2003 को भूतपूर्व संस्कृति और पर्यटन मंत्री श्री जगमोहन द्वारा किया गया जिसमें बोल्शोई सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट सरकस, स्टेट एकेडेमिक क्लासिकल बैले थिएटर, स्टेट म्यूजिकल थिएटर ऑफ नेशनल आर्ट द्वारा प्रदर्शन और इगोर बुटमैन और जैज क्वार्टेट द्वारा संगीत-समारोह प्रस्तुत करके कार्यक्रम की शुरुआत की गई थी।
नई दिल्ली, मुंबई और कोलकाता में आयोजित प्रदर्शनों का ब्यौरा निम्न प्रकार है :

दिल्ली
2 नवंबर
स्थान : तालकटोरा ऑडिटोरियम, नई दिल्ली
प्रदर्शन : बोल्शोई सेंट पीटर्स स्टेट सरकस द्वारा

3 नवंबर
स्थान : सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली
प्रदर्शन : स्टेट एकेडेमिक क्लासिकल बैले थिएटर द्वारा
7 नवंबर
स्थान : सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली
प्रदर्शन : स्टेट म्यूजिकल थिएटर ऑफ नेशनल आर्ट

8 नवंबर
स्थान : सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली
प्रदर्शन : इगोर बुटमैन एंड द् जैज क्वार्टेट द्वारा

मुंबई
3 नवंबर
स्थान : होमी भाभा ऑडिटोरियम, मुंबई
प्रदर्शन : स्टेट म्यूजिकल थिएटर ऑफ नेशनल आर्ट द्वारा

4 नवंबर
स्थान : जमशेद भाभा ऑडिटोरियम, एनसीपीए, मुंबई
प्रदर्शन : बोल्शोई सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट सरकस द्वारा

स्थान : होमी भाभा ऑडिटोरियम, मुंबई
प्रदर्शन : स्टेट एकेडेमिक क्लासिकल बैले थिएटर द्वारा

स्थान : नेहरू सेंटर ऑडिटोरियम, मुंबई
प्रदर्शन : इगोर बुटमैन एंड द् जैज क्वार्टेट द्वारा

कोलकाता
5 नवंबर
स्थान : साईंस सिटी मिनी ऑडिटोरियम, कोलकाता
प्रदर्शन : इगोर बुटमैन एंड द् जैज क्वार्टेट द्वारा

स्थान : जीडी बिरला सभागार, कोलकाता
प्रदर्शन : स्टेट म्यूजिकल थिएटर ऑफ नेशनल आर्ट द्वारा
6 नवंबर
स्थान : साईंस सिटी ऑडिटोरियम, कोलकाता
प्रदर्शन : बोल्शोई सेंट पीटर्स बर्ग स्टेट सरकस द्वारा

7 नवंबर
स्थान : साईंस सिटी ऑडिटोरियम, कोलकाता
प्रदर्शन : साहिल सिरी ऑडिटोरियम द्वारा

नृत्य स्वर्ण

अकादेमी गोल्डन जुबली डांस फेस्टिवल, मुंबई

संगीत नाटक अकादेमी ने स्वर्ण जयंती के एक भाग के रूप में नृत्य स्वर्ण - नृत्य के राष्ट्रीय पर्व के रूप में आयोजित किया, जिसमें भरतनाट्यम, कथक, कूचिपूडि, ओडिसी, *मणिपुरी, मोहिनीआट्टम और सत्रिय जैसी प्रमुख नृत्य* शैलियों के कुछेक उत्कृष्ट कलाकारों द्वारा प्रतिपादित भारतीय नृत्य की समृद्ध परंपरा को प्रकट किया गया है। आयोजन 7-13 नवंबर, 2003 तक नेहरू सेंटर ऑडिटोरियम, मुंबई में किया गया था। इस एक सप्ताह लंबे उत्सव में 14 प्रतिष्ठित कलाकारों - सभी अकादेमी सम्मान से सम्मानित - द्वारा प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की गईं। इनमें अकादमी रत्न सदस्य गुरु वेमपति चिन्ना सत्यम सम्मिलित हैं।

उत्सव का मुख्य उद्देश्य प्रमुख एकल नर्तकों द्वारा प्राप्त की गई उत्कृष्टता को प्रदर्शित करना था। इसमें नृत्य की चुनिंदा प्रमुख संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत समूह प्रस्तुतियों को भी उचित प्रतिनिधित्व दिय गया। समालोचकों और गुणज्ञों को बहु-शैली प्रस्तुति 'अष्टनायिका' विशेष रुचिकर लगा। जिसमें मुंबई की सुविख्यात और युवा नर्तकियों को प्रस्तुत किया गया था। कार्यक्रम में प्रस्तुत किए गए कलाकार/समूह निम्न प्रकार है :

7 नवंबर
कलाकार/समूह : प्रतिभा प्रह्लाद
नृत्य-शैली : भरतनाट्यम
संगतकार : के.आर.वी पुलाकेसी (नट्टुवंगम), पी. राम (गायन), पी. जनार्दन (मृदंगम), दयाका (वायलिन), के.जे. जयराम (बाँसुरी) मदन रमन (नाद्स्वरम)

प्रस्तुत कलाकार/समूह : राजेंद्र गंगानी, कथक
संगतकार : फतेह सिंह गंगानी (तबला), विजय परिहार (गायन), कमाल अहमद (सारंगी), देवेंद्र (बाँसुरी), किशोर गंगानी (पधांत)

8 नवंबर
वैजयंती माला बाली, भरतनाट्यम
संगतकार : श्याम सुंदर (नट्टुवंगम), पद्मिनी वेंकटेश (गायन), एस. शिवारामकृष्ण (मृदंगम)

उमा शर्मा, कथक
संगतकार : ज्वाला प्रसाद (गायन), मुबारक अली (तबला), खालिद मुस्तफा (सितार), अजय प्रसन्ना (बाँसुरी)

9 नवंबर
दर्शना झावेरी और मणिपुरी नर्तनालय, मुंबई के कलाकार-रंजना झावेरी, सुरवाला देवी, हर्षिणी शाह, विधि तुरखिया, मीरा उनादकत और श्रेया अयूब, मणिपुरी
संगतकार : अताशी चटर्जी, लतासना देवी, सुशांत दास, ब्रोजन सिंह, हिमांशु नंदा, शबीर और भरत व्यास। नृत्य और संगीत रचनाकार गुरु विपिन सिंह सहायक दर्शना झावेरी, कलावती देवी और लतासना देवी

स्वप्न सुंदरी, कूचिपूडी
संगतकार : तंजावुर केसन (नट्टूवंगम), अनसूया मूर्ति (गायन), जनार्दन (मृदंगम), श्रीधर (तालवाद्य प्रभाव), जयराम (बाँसुरी) और सी.एस. अनुरूप (वायलिन)

10 नवंबर, 2003
किरन सैगल, ओडिसी
संगतकार : सत्यनारायण महाराणा (गायन), सुरेंद्र महाराणा (मरदल), राम साहू (मंजीरा और गायन समर्थन), विजय कुमार (बाँसुरी), रईस अहमद (सितार), गोपीनाथ सैन (वायलिन) और मिलिंद (प्रकाश व्यवस्था)

मल्लिका सरुक्कै, भरतनाट्यम

संगतकार : ए.एस. मुराली (नट्टूवंगम), एन. भाग्य लक्ष्मी (गायन), पी. के. रंगनाथन (मृदंगम), एन. सिगमणि (वायलिन), आलेख और व्याख्या : सरोजा कामाक्षी, बिमल जोशी (प्रकाश व्यवस्था)

11 नवंबर

प्रस्तुत कलाकार/समूह : घनकांत बरा एवं समूह - अनवेस महंत, प्रणवी शर्मा, सिस्तारानी हजारिका, गोपाल बर बयान, निरंजन अनंत बयान, हेमंत बयान, नारायण कलिता, हरि साइकिया और द्विजेन बर्मन
संगत कार : घनकांत बरा (खोल), नित्यानंद डेका (गायन), कुशल वैश्य (वायलिन), प्रवीण कलिता (बाँसुरी), हरि साइकिया और द्विजेन बर्मन (झाँझ)

कनक रेले और नालंदा डांस रिसर्च सेंटर मुंबई के नर्तक-माधुरी देशमुख, रूपा सावंत, सारिका म्हात्रे, सजी नायर और तन्वी भंसाली, मोहिनीआट्टम
संगतकार : सी. गोपाल कृष्ण (नट्टूवंगम), एस.एस. गिरिसन (गायन), के.एन.पी. नंबीसन (इडक्कै), वी. मुरुकन (मृदंगम) नारायण मणि (वीणा) और बालसुब्रह्मणियन (वायलिन)

रोहिणी भाटे और नृत्य भारती, पुणे के नर्तक-शर्वरी जामेनिस, ऋजुता सोमन, प्राजक्त राज और मनिषा राज, कथक
संगतकार : निखिल पाठक (तबला), चिन्मय कोल्हाटकर (हारमोनियम), अजित सोमन (बाँसुरी), अमला शेखर (पधांत)

12 नवंबर

अष्टनायिका-भरत *नाट्यशास्त्र* पर आधारित/संध्या पुरेचा (भरतनाट्यम), झेलम परांजपे (ओडिसी), शांता रानी मिश्र (कूचिपूडि), केका सिंहा (कथक), हर्षिणी शाह (मणिपुरी), उर्वी वोहरा (मोहिनीआट्टम) और प्रिया नम्बूदरी (कथकली)
नृत्य-शैली : भरतनाट्यम, ओडिसी, कूचिपूडि, कथक, मणिपुरी, मोहिनीआट्टम और कथकली पर आधारित नृत्य रचना प्रस्तुति
संगतकार : काजी लताफत हुसैन, निदेशक, संस्कृति, नेहरू सेंटर, मुंबई - *संकल्पना, गीत और निर्देशन,* संध्या पुरेचा-*समन्वय,* आचार्य पार्वती कुमार, कनक रेले, दर्शना झावेरी, कलामंडलम सी. गोपालकृष्णन - *मार्गदर्शन*। सिराज खान - *संगीत*/सिराज खान, अपर्णा अपराजित, शाम्पा पाकृषि, मृदुला ढाडे-जोशी, शिव प्रसाद, गिरीसन, कलामंडलम सी. गोपालकृष्ण - *गायक,* महावीर - *तबला,* नटवर महाराणा और देवेंद्र शैलर - *पखावज,* सुनीलकांत गुप्ता - *बाँसुरी,* श्रीकांत मल्पेकर - *थटम्,* गौतम जोशी - *स्टेज,* प्रदीप कुशनाजी - *ध्वनि*

वेमपति चिन्ना सत्यम् का समूह - कूचिपूडि आर्ट एकेडेमी, चेन्नई। नर्तक : वेमपति रवि शंकर, श्रीविद्या वेमपति, श्रीमई वेमपति, वानजा, शोभा वेंकटेश, विजया और वरिष्ठ संध्या, कूचिपूडि
गुरु वेमपति चिन्ना सत्यम - *नृत्यरचनाकार और नट्टूवंगम, संगतकारः* गोपाकुमार सीता लक्ष्मी - (गायन), ई. देवराज - (बाँसुरी), एस. वेंकटरमन - (वीणा), एल.एस. सूर्यकांत - (मृदगंम), एस. बालसुब्रहमणियन - (वायलिन)

13 नवंबर

चित्रा विश्वेश्वरन, भरतनाट्यम
संगतकार : आर. विश्वेश्वरन - (गायन), सुकन्या रविंदर - (नट्टूवंगम), अड्यार श्री के. गोपीनाथ - (मृदंगम), उमा नम्बूदरीपाद - (गायन), शशिधरण - (बाँसुरी), एन. **वीरामणि - (वायलिन)**, भवानी प्रसाद - (वीणा)

सोनल मानसिंह, ओडिसी
संगतकार : दयानंद परिहस्त - *गायन,* निरंजन भोल - *पखावज,* अबरार हुसैन - *सरोद,* श्रीनिवास सतपथी - *बाँसुरी,* हरीश जैन - *प्रकाश व्यवस्था*

संगीत नाटक अकादेमी की स्वर्ण-जयंती पर स्मारक डाक-टिकट

डाक विभाग, भारत सरकार ने अकादेमी की स्वर्ण-जयंती पर पाँच रुपए मूल्यवर्ग के तीन स्मारक डाक टिकट निकाले जिनमें प्रदर्शन कलाओं के जीवंत भाव चित्रित किए गए हैं। डाक-टिकटों को 22 दिसंबर 2003 को सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने पूर्व पर्यटन और संस्कृति मंत्री, श्री जग मोहन और पूर्व विनिवेश, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री अरुण शौरी की उपस्थिति में जारी किया।

अकादेमी की अध्यक्ष श्रीमती सोनल मानसिंह और अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. भूपेन हजारिका ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी को बधाई दी। स्मारक डाक टिकट जारी करने के पश्चात माननीय प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रियों और अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों ने लय प्रवाह - ऐन्सेम्बल ऑफ ड्रम्स ऑफ इंडिया - का आनंद लिया जिसका निर्देशन प्रख्यात मृदंगम संगीतज्ञ श्री टी.वी. गोपालकृष्णन द्वारा किया गया था।

स्वर्ण रंग प्रतिभा

युवा रंगकर्मियों द्वारा नाट्य उत्सव

स्वर्ण जयंती समारोहों के अवसर पर अकादेमी ने 'स्वर्ण रंग प्रतिभा' नामक युवा रंगमंच निर्देशकों के नाटकों की शृंखला का आयोजन युवा निर्देशकों को और आगे बढ़ने तथा अपने कला-कार्यों को उत्तर-पूर्व राज्यों के अपने राज्यों से बाहर की सीमाओं में ले जाने का अवसर प्रदान करने के लिए किया गया था, असम में यह आयोजन सिबसागर में 6-10 जनवरी, 2003 तक सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, असम सरकार के सहयोग से मणिपुर, इम्फाल में 19-29 जनवरी,

2004 तक मणिपुर स्टेट कला अकादेमी फॉर कॉरस रेपर्टरी थिएटर, इम्फाल के सहयोग से और त्रिपुरा, अगरतला में 16-29 मार्च, 2004 तक सूचना, संस्कृति और पर्टयन निदेशालय, त्रिपुरा सरकार के सहयोग से इस समारोह का आयोजन किया गया।

प्रत्येक राज्य के युवा रंगमंच निर्देशकों के नाटक प्रदर्शित करने के अलावा राज्यों के भीतर से और देश के अन्य भागों से रंगमंच विशेषज्ञों और प्रेक्षकों को पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए आमंत्रित किया गया था। निर्देशकों, नाटकों और प्रदर्शनकर्ता समूहों का विवरण इस प्रकार है :

सिबसागर, असम 6 से 10 जनवरी, 2004

नाटकः एन्ने फ्रैंकोर डायरी; निर्देशकः प्रशांत शर्मा; समूहः नाट्यपीठ, सिबसागर।

नाटकः लभिता; निर्देशकः जिंतू हजारिका; समूहः गिब्बन नाट्य गोष्ठी ना कचरी, जोरहाट।

नाटकः रूपालिम; निर्देशकः शुक्राचार्य रवा; समूहः बदुंगदुप्पा, दुधनोई।

नाटकः मृणाल माही; निर्देशकः मृणाल कुमार बरा। समूहः रंगालय, प्लूरानीगुडम।

नाटकः डंगर पूणा उभातियू आहिबो; निर्देशकः राजेश दास; समूहः अजंक, डिबरुगढ़।

नाटकः सोनित खुंगरी; निर्देशकः स्वप्नज्योति ठाकुर; समूहः नब चित्रलेखा नाट्य गोष्ठी, दुधनोई।

नाटकः नस्ता परिक्रमा; निर्देशकः जिंतू भट्टाचार्य; समूहः भिपुरिया थिएटर अकादेमी।

नाटकः गांथा; निर्देशकः रबिजीत गोगोई; समूहः जिरसौंग थिएटर, गुवाहाटी।

इम्फाल, मणिपुर, 19 से 29 जनवरी, 2004

नाटकः क्षुधित पाषण (द् हंगरी स्टोन); निर्देशकः एच. तोम्बा; समूहः कला क्षेत्र, इम्फाल।

नाटकः कादोमदानो चितलीसीबू; निर्देशकः कुमारी एस. थानिन लीमा; समूहः कॉस्मोपॉलिटन ड्रामाटिक यूनियन, इम्फाल।

नाटकः कोमा; निर्देशकः लेईशंगबम थनंजय; समूहः हाइवे थिएटर, अवांग सेकमई।

नाटकः मंग-लेई (द ग्रेव एफीज़ी); निर्देशकः निंगताउजा दीपक; समूहः एनटी थिएटर, मणिपुर।

नाटकः इमेजी फनेक माचेत (ए टोर्न पीस ऑफ मदर्स फनेक); निर्देशकः बी. सविता देवी; समूहः मणिपुरी ऐन्सेम्बल, इम्फाल।

नाटकः स्ट्रीट बॉय; निर्देशकः एम. ब्रजबिंदु सिंह; समूहः पेराडाइज़ थिएटर, इम्फाल।

नाटकः हिंगनिंगलीबा थवाई (द् यॅनिंग सोल); निर्देशकः लेइश्रम प्रकाश सिंह; समूहः लेइमयोल आर्ट्स सेंटर, इम्फाल।

नाटकः तिनथ्रोक (अर्थवॉम); निर्देशकः दोमरेंद्र अखम; समूहः पब्लिक थिएटर, पोइजिंग, नम्बोल।

नाटकः जूलियस सीज़र; निर्देशकः खो. रत्नकुमार; समूहः पनथोइबी नाट्य मंदिर, इम्फाल।

अगरतला, त्रिपुरा 16-29 मार्च, 2004

नाटकः राजरामेर लॉटरी; निर्देशकः निर्घोष निक्कोन; समूहः निर्घोष निक्कोन।

नाटकः कोर्ट मार्शल; निर्देशकः अरुण पाल; समूहः कल्चरल केम्पेन, खावेई।

नाटकः कुट्टू; निर्देशकः अमृत शिव; समूहः पटभूमि, अगरतला।

नाटकः अवयव; निर्देशकः श्यामल वैद्य; समूहः सायक, कमलपुर।

नाटकः बाघेर पांचाली; निर्देशकः शुभाशीष चौधरी; समूहः कबिता**लोक,** अगरतला।

नाटकः पेन्नम कलिकाता; निर्देशकः पिनंक दत्ता; समूहः त्रिवेणी सामाजिक-ओ-सांस्कृतिक संस्थान, बिलोनिया।

नाटकः उतना कुमलाबा मोई (छई चापा अगुन); निर्देशकः एस. उत्तम कुमार सिन्हा; समूहः लईकोन मणिपुरी कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, खोवई।

नाटकः हांडी वृतान्त; निर्देशकः प्रथाप्रतिम आचार्य; समूहः नाट्य भूमि ग्रुप थिएटर, अगरतला।

नाटकः एकलव्य (काकबरक); निर्देशकः मधुसूदन देव वर्मा; समूहः लम्प्रा ट्रस्ट, अगरतला।

गोल्डन हेरिटेज

फेस्टिवल-कम-सेमिनार ऑफ ट्रेडीशनल आर्ट हेरिटेज ऑफ मणिपुर

संगीत नाटक अकादेमी ने स्वर्ण जयंती के एक भाग के रूप में प्रदर्शन कला का अवलोकन करने और परिप्रेक्ष्य में देश की सांस्कृतिक पंरपरा को बनाए रखने और बदलते परिप्रेक्ष्य में देश की सांस्कृतिक परंपरा को बनाए रखने और समृद्ध करने के संबंधित मामलों पर संभाषण को व्यापक करने के लिए देश के प्रत्येक राज्य में परंपरागत कला के उत्सवों की श्रृंखला का आयोजन किया। अपने प्रकार के पहले 'गोल्डन हेरिटेज' उत्सव का आयोजन पोलो ग्राउंड, इम्फाल में विशेष रूप से निर्मित प्रदर्शन रंगस्थलों पर 2 से 6 दिसंबर, 2003 तक मणिपुर की राज्य अकादेमी-मणिपुर स्टेट कला अकादेमी, इम्फाल के सहयोग से मणिपुर में किया गया था। इस समारोह का उद्घाटन मणिपुर के राज्यपाल महामहिम श्री अरविंद दवे ने किया।

उत्सव को 7 खंडों - लाम फामपक (जनजातीय नृत्य), हराओबुंग (लाई हराओबा), हियांग हिरेन (आख्यान कलाएँ), टरांगकई (संगोष्ठी), पंगल फामपक (मारिफात, गजल और कव्वाली), प्रदर्शनी गलियारा और विजय गोविंद मंडप (गौर लीला) में विभाजित किया गया था जिसकी कल्पना प्रख्यात रंगमंच निर्देशक, रतन थियम की अध्यक्षता वाली समिति ने की थी। विभिन्न प्रकार के मणिपुर के परंपरागत कला रूपों के अलावा 3 से 5 दिसंबर, 2003 तक एक संगोष्ठी का भी संचालन किया गया था जिसमें मणिपुर के विद्वानों और विशेषज्ञों के साथ बाहर के क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने भाग लिया और विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श करके मणिपुर की कला परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए उपायों की सिफारिश की। उत्सव में 800 से अधिक कलाकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम का विवरण निम्न प्रकार है :

दिनांक	लाम फामपक (जनजातीय नृत्य) सायं 2 से सायं 5	टरांगकई (संगोष्ठी) प्रातः 9 से 12 मध्याह्न	हियांग हिरेन (आख्यान कला) सायं 2 से सायं 4	हराओबंग (लाइ हराओबा) सायं 2 से सायं 5	अन्य
2 दिसंबर	1. तांगल 2. तराई 3. चौथे 4. माओ 5. काबुई	-	खुनुंग इशई	कांगलेई हराओबा	प्रदर्शनी
3 दिसंबर	1. चीरू 2. मरम 3. पाऊमई 4. टंगखुल 5. काबुइल	संगोष्ठी	1. पेना 2. खुनुंग इशई	काकचिंग हराओबा	प्रदर्शनी
4 दिसंबर	1. कोम 2. मोनसांग 3. आइमोल 4. सोउनलुन 5. माओ	संगोष्ठी	खौंगजोमपारा	चकपा हराओबा	प्रदर्शनी
5 दिसंबर	1. मोयोन 2. टांगखल 3. गंगटे 4. काबुई 5. टंगखुल	संगोष्ठी	पेना और खौंगजॉम पर्व	मोईरंग हराओबा	प्रदर्शनी
6 दिसंबर	1. मारिंग 2. अनल 3. तादऊ 4. खरम	-	पेना	चकपा हराओबा और शुमांगलीला	प्रदर्शनी और 1. मारिफत 2. गजल 3. कव्वाली गौर लीला

स्वर्ण जयंती समापन समारोह

संगीत नाटक अकादेमी का स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम द्वारा 28 जनवरी, 2003 को सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में किया गया था उसका औपचारिक रूप से समापन कमानी ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में आयोजित एक विशेष समारोह में हुआ जिसमें भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री भैरों सिंह शेखावत मुख्य अतिथि के रूप में और पं. रवि शंकर, अकादेमी की अध्यक्ष श्रीमती सोनल मानसिंह और पूर्व पयर्टन और संस्कृति मंत्री श्री जगमोहन ने समारोह की शोभा बढ़ाई।

विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की अध्यक्ष श्रीमती सोनल मानसिंह ने कहा कि :

"संगीत नाटक अकादेमी ने 28 जनवरी, 2003 को अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन किया। यह अवसर अकादेमी के शानदार अतीत का अवलोकन करने और भविष्य के लिए इसका मार्ग प्रशस्त करने की योजना बनाने का था। हालांकि पिछले पचास वर्षों में अकादेमी ने देश के विविधतापूर्ण सांस्कृतिक ढाँचे को परिरक्षित करने के लिए संधर्ष किया है, फिर भी यह अगली शताब्दी में नई शुरूआत की देहलीज पर थी।" उन्होंने कलाकारों का आह्वान किया कि वे एकजुट होकर अपनी कला के जरिए भारत में शांति और सामंजस्य स्थापित करने के लिए योजनाओं का निर्माण करें।

दर्शकों के बीच और बाद में अनेक विद्वानों को परिचालित उनका 'विजन फार द् फ्यूचर' लेख यहाँ पर भी पुनः प्रस्तुत किया जा रहा है :

> इक्यावन वर्षों की महत्वपूर्ण यात्रा ने संगीत नाटक अकादेमी को नई सहस्राब्दि की देहलीज पर लाकर खड़ा कर दिया है। कंप्यूटर जनित सभ्यता के नए घटनाक्रम से संघर्ष के लिए नई ऊर्जा प्रदान करते हुए अकादेमी सांस्कृतिक संवाद के सार्वभौमिकृत विजन से लाभ उठाना चाहती है।
>
> महान और विविध सांस्कृतिक विरासत के उत्तराधिकारी के रूप में, अकादेमी देश और विदेश में इसकी बहुविध गतिविधियों को और सुदृढ़ करने के लिए वचनबद्ध है। संरक्षण, प्रलेखन, प्रचार और प्रसार की नई कार्यप्रणालियाँ उपयोग में लाई जा रही हैं ताकि पुरानी और परंपरागत प्रणालियों को आधुनिक और समसामयिक संदर्भ में लाया जा सके।
>
> आर्थिक, प्रौद्योगिकीय और वैज्ञानिक प्रगति के उभरते हुए दृश्य-विधान में, सांस्कृतिक और सौंदर्यमूलक मूल्य आधारित प्रणाली की आवश्यकता न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में अनुभव की गई है।
>
> संगीत नाटक अकादेमी जैसी संस्थाओं की मानव की पहचान और उसके पर्यावरण में अनिवार्य संतुलन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका है।"

इस अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति ने कहा : "भारत संगीत, नृत्य और रंगमंच में अन्य देशों की तुलना में बहुत आगे है और यह उपयुक्त समय है कि इसने अन्य देशों को प्रभावित करने के लिए इस विरासत को फैलाने की सोची है। हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि भारत इसके प्रभाव को किस प्रकार बढ़ा सकता है।"

इस अवसर पर अकादेमी के अभिलेखागार से विशेष रूप से संकलित वीडियो फिल्म "संगीत नाटक अकादेमी रेमिनिसेंसिस . . ." भी प्रदर्शित की गई जिसमें 28 जनवरी, 1953 के उद्घाटन समारोह के फिल्म के अंश सम्मिलित थे।

स्वर्ण नृत्य प्रतिभा : युवा नर्तक उत्सव की शृंखला 2004

स्वर्ण जयंती समारोह के विस्तार के रूप में, संगीत नाटक अकादेमी ने नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए उत्सवों की शृंखला का आयोजन किया। ये उत्सव क्षेत्रवार आयोजित किए गए थे जिनमें अन्य क्षेत्रों के एक चौथाई भागीदारों ने भाग लिया ताकि उत्सवों का स्वरूप राष्ट्रीय हो जाए। कार्यक्रम का विवरण निम्न प्रकार है :

उत्तर क्षेत्र : चडीगढ़ 17-21 फरवरी, 2004
चंडीगढ़ प्रशासन और चंडीगढ़ संगीत नाटक अकादिमी के सहयोग से

17 फरवरी
टैगोर थिएटर, चंडीगढ़
उद्घाटन; उत्तर कमलाबारी सत्र, माजुली-सत्रिय (गायन बायन); कपिल शर्मा एवं अदिति राव, दिल्ली-भरतनाट्यम; गुंजल दीक्षित, लखनऊ-कथक; यामिनी रेड्डी, दिल्ली कूचिपूडि

18 फरवरी
नरेन चंद्र बरुआ, गुवाहाटी-सत्रिय; सदानम श्रीनाथन, दिल्ली-कथकली; सुकन्या, दिल्ली-ओडिसी; माला शर्मा, लखनऊ-कथक

19 फरवरी
मणिपुरी नर्तनालय, कोलकाता, संजीव भट्टाचार्य, गुड़गांव के साथ; वाणी भल्ला, दिल्ली-मोहिनीआट्टम; अनुराधा वेंकटरमन, दिल्ली भरतनाट्यम; परमिता दोभाल, गढ़वाल-कथक

20 फरवरी
फणीश्वर भास्कर, महेंद्र रावत और मीनाक्षी चोपड़ा, दिल्ली समसामयिक-नृत्य; पूर्वधनश्री, दिल्ली-भरतनाट्यम; मयूर आर्ट सेंटर, भुवनेश्वर, मयूरभंज-छऊ; एसएनए छऊ परियोजना के प्रशिक्षणार्थी, दिल्ली सराइकेला-छऊ; पूर्व कौसर पुरी, समीरा कौसर एवं अनुराधा अरोड़ा, चंडीगढ़-कथक

21 फरवरी
दिव्या एवं दीक्षा उप्रेती, दिल्ली-कथक; नारायण नृत्यालय, दिल्ली-पुंग चोलम/ढोल चोलम; मिताली कामत, मुंबई-ओडिसी; सुकन्या वेंकटरमन, दिल्ली-भरतनाट्यम; कथक केंद्र ग्रुप, दिल्ली और हरीश गंगानी-कथक;

शिक्षकों द्वारा शिष्यों के साथ निदर्शन;
प्रतिदिन 10.30 प्रातः, टैगोर थिएटर, चंडीगढ़

18 फरवरी
श्रीमती प्रीति फूलका, चंडीगढ़; श्रीमती जसविंदर कौर, चंडीगढ़

19 फरवरी
श्रीमती डेजी वालिया, पटियाला; श्रीमती स्नेह नंदा, चडीगढ़

20 फरवरी
श्रीमती रश्मि नंदा, अमृतसर; श्रीमती संतोष व्यास, जालंधर

21 फरवरी
श्रीमती सुचित्रा मित्रा, चंडीगढ़; श्री मधुकर आनंद, देहरादून

पश्चिम क्षेत्र : वडोदरा 13-17 मार्च, 2004
खेल-कूद, युवा और सांस्कृतिक क्रियाकलाप विभाग, गुजरात सरकार और गुजरात संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से

13 मार्च
सी.सी. मेहता ऑडिटोरियम, एस.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा
उद्घाटन श्रीमती सोनल मानसिंह, अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 6.45 बजे सायं, उद्घाटन के पश्चात "संगीत नाटक अकादेमी रेमिनिसिस . . . " फिल्म का प्रदर्शन किया गया
लिंगराज प्रधान एवं लीमा भोल, भुवनेश्वर-ओडिसी; पल्लवी सरन माथुर, दिल्ली-भरतनाट्यम; मुग्धा बेलवालकर एवं आभा औती, पुणे-कथक

14 मार्च
बिंबावती देवी, कोलकाता-मणिपुरी; गीतांजलि सिंह, जयपुर-कथक; रुचि अनदकत एवं हरिकृष्ण ठक्कर, वडोदरा-भरतनाट्यम; अकादेमी की छऊ परियोजना के कलाकार, बारिपदा/सराइकेला मयूरभंज एवं सराइकेला के छऊ नृत्य

15 मार्च
नतून कमलाबारी सत्र के कलाकार, माजुली; सीता रानी हजारिका एवं तराली दास, गुवाहाटी-सत्रिय; राधिका राधाकृष्णन, मुंबई-मोहिनीआट्टम; रश्मि भरत तेरफाले, पुणे-कथक; नर्तन स्कूल ऑफ क्लासिकल डांसिस, अहमदाबाद-कूचिपूडी

16 मार्च
श्री राज राजेश्वरी भरतनाट्य कला मंदिर, मुंबई-भरतनाट्यम; संतोष नायर का दल, दिल्ली-समसामयिक; अरुणा रेखा, चेन्नई, कुचिपुडी; प्रशांत शाह, अहमदाबाद-कथक

17 मार्च
प्राची शाह, मुंबई-कथक; केतकी शेटगे और सनातन चक्रवर्ती, मुंबई-ओडिसी; रॉयल छऊ एकेडमी, पुरुलिया का पुरूलिया नृत्य; फेकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स, डिपार्टमेंट ऑफ डांस, एम.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा-भरतनाट्यम एवं कथक

पूर्वी क्षेत्र : कोलकाता 21-25 मार्च, 2004
सूचना और सांस्कृतिक कार्य विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से

रवींद्र सदन, कोलकाता
21 मार्च, 5.00 बजे सायं
रवींद्र सदन, कोलकाता
उद्घाटन के पश्चात् फिल्म का प्रदर्शन
मधुस्मिता महान्ती, भुवनेश्वर-ओडिसी; मधुबणी चटर्जी, कोलकाता-भरतनाट्यम; मैथिल देविका राजगोपालन, बंगलौर-मोहिनीआट्टम; संदीप मलिक एवं मितुल सेनगुप्ता, कोलकाता-कथक

22 मार्च, 6.30 बजे सायं
संजुक्ता रे और श्राबंती भट्टाचार्य, कोलकाता-ओडिसी; कमलाबारी सत्र, तीताबोर, जोरहट-सत्रिय (गायन बायन); शतरूप चटर्जी एवं नरेनचंद्र बरुआ, गुवाहाटी-सत्रिय; जी. विद्यामूर्ति, विशाखापतनम-कूचिपूडी; आलोकपर्ण गुहा, कोलकाता-कथक

23 मार्च, 6.30 बजे सायं
वैशाली बसु एवं सुमन सराबगी, कोलकाता-मणिपुरी; अर्कदेव भट्टाचार्य, कोलकाता-भरतनाट्यम; अमृता मिश्रा, मिदनापुर-ओडिसी; भावना मिश्रा, पाना-कथक; केदार आर्ट सेंटर, सराइकेला एवं संगीत नाटक अकादेमी छऊ परियोजना के कलाकार; बारिपदा सराइकेला और मयूरभंज-छऊ

24 मार्च, 6.30 बजे सायं
सुशांत कुमार दाश एवं पद्मिणी राउत, भुवनेश्वर-ओडिसी; संजुक्ता बनर्जी एवं चन्द्रेयी बसु ठाकुर, कोलकाता-मोहिनीआट्टम; जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी, इम्फाल-ढोल चोलम; अरूणिमा कुमार, दिल्ली-कूचिपूडी; देबाश्री भट्टाचार्य, कोलकाता-कथक

25 मार्च, 6.30 बजे सायं
मोहिनी शिलालिपि, भुवनेश्वर-ओडिसी; अनुसूया बनर्जी, कोलकाता-भरतनाट्यम; जवाहरलाल नेहरु मणिपुर नृत्य अकादेमी, इम्फाल; पुंगचोलम एवं मणिपुरी रास; अभिमन्यु लाल, दिल्ली-कथक

दक्षिण क्षेत्र : तिरुवनंतपुरम 25-30 मार्च, 2004
केरल संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से

25 मार्च
टैगोर थिएटर, वझूताकॉड, तिरुवनंतपुरम
संगीत नाटक अकादेमी रेमिनिसेन्स . . . फिल्म का प्रदर्शन; विंदूजा मेनन एवं जे. एल. सरिता, तिरुवनंतपुरम, मोहिनीआट्टम; लावण्यानंत, चेन्नई भरतनाट्यम; प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट लेबोरेटरी, इम्फाल-मणिपुरी रास और पुंगचोलम

26 मार्च
कीर्ति राम गोपाल, बंगलौर-भरतनाट्यम; इवा पवित्रण एवं सीनी थंकप्पन, त्रिसूर-मोहिनीआट्टम; वंदना कौल, दिल्ली-कथक; गीता माधुरी, हैदराबाद-कुचिपुडी

27 मार्च
नतून श्री श्री भोगपुर सत्र पल्लवीखोंड एवं अंजलिबोरबरा के साथ, जोरहाट सत्रिय; पी.बी. पल्लवी एवं ए. सरस्वतीपूर्णिमा, हैदराबाद-कूचिपूडी; युधिष्ठिर नायक और लिप्सादाश, भुवनेश्वर-ओडिसी; मार्गी उषा, तिरुवनंतपुरम-नंगिआरकुतु; एन. श्रीकांत एवं अस्वाति वी. नायर, चैन्नई/कोजीकोडे-भरतनाट्यम

28 मार्च
श्वेतालीना स्वैन एवं स्मर्णिक जेना, भुवनेश्वर-ओडिसी; दिव्या रामचंद्रन एवं उन्नीकृष्णन, चैन्नई-भरतनाट्यम; संदीप के. महावीर, मुंबई-कथक; मयूर आर्ट सेंटर, भुवनेश्वर-मयूरभंज छऊ; केरल कलामंडलम, चेरुथुरुती मोहिनिआट्टम

29 मार्च
उमा नम्बूदरीपाद, चैन्नई-भरतनाट्यम; संगीता गोपी एवं शालीनीस, एर्नाकुलम/त्रिपुनीथुरा- मोहिनीआट्टम; चिंत्रावी बाल कृष्ण, कूचिपूडी; परवीन दिवाकर, गंगानी और गौरी, दिल्ली-कथक

30 मार्च
संस्कृतिक भवन, वाइलोपिल्ली, कूत्ताम्बलम, तिरुवनंतपुरम
कथकली की विशेष संध्या :
नलचरितम प्रथम दिन और दक्षयागम वेशम् : कलामंडलम मुकुंदन, मुथुकुलम, अलप्पुझाय विष्णु नेल्लियौडे, तिरुवनंतपुरम; कलामंडलम षणमुखम, पुलानगडी, अलप्पुझा; कलाभारती वासुदेवन, मदावूर, पल्लिक्कल; कलामंडलम अनिल कुमार, कोल्लम; कलामंडलम प्रशांत, कोल्लम; कलामंडलम हरि एच. नायर, अत्तिंगल

पत्तू : कला मंडलम हरीश नमबूदरी, कोट्टायम; कलानियालम रजीवन अलवाय; कला मंडलम अजेश, चेरुत्तुरूती

चेंदा : कलामंडलम श्रीकांत, मवेलिक्कारा; कलामंडलम थाम्पी, तिरुवंनतपुरम

मद्दलम : मार्गी रत्नाकरन, तिरुवनंतपुरम; कलाभरती राजीव, पल्लिक्कल, तिरुवनंतपुरम

स्वर्ण संगीत प्रतिभा, इलाहाबाद

संगीत नाटक अकादेमी ने अपने स्वर्ण जयंती समारोह के विस्तार के रूप में युवा संगीतज्ञों का महोत्सव-स्वर्ण संगीत प्रतिभा-का आयोजन 10-14 मार्च, 2004 को सांस्कृतिक केंद्र प्रेक्षागृह, इलाहाबाद में उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद के सहयोग से किया। इस उत्सव का उद्देश्य युवा पीढ़ी की उन सर्वोत्तम प्रतिभाओं को ढूंढ निकालना था, जिनके ऊपर प्रख्यात विद्वानों द्वारा उन्हें सिखाई गई भारत की विभिन्न संगीत शैलियो की परंपरा को आगे बढ़ाने का उत्तरदायित्व है। समारोह में विशेष रूप से देश के उत्तर मध्य क्षेत्र के संगीतज्ञों पर ध्यान केंद्रित किया गया था। अधिक विविधता और भिन्न संगीत शैलियों के प्रतिनिधित्व के साथ ही समारोह को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने के दृष्टिकोण से इस में अन्य क्षेत्रों और शैलियों के कुछ संगीतज्ञों को भी शामिल किया गया था। मुख्य रूप से होनहार एकल संगीत रचनाकारों पर बल दिया गया था। उत्सव के अवसर पर एक लघु फिल्म "संगीत नाटक अकादेमी रेमिनिसंस" का प्रदर्शन दोनों समारोहों के उद्घाटन अवसर पर किया गया। अकादेमी के अभिलेखागार से संकलित इस फिल्म में अकादेमी के योगदान और पूर्व के महान गुरुओं की झलकियों को दिखाया गया है। साथ ही दोनों उत्सवों के दौरान "उस्ताद बड़े गुलाम अली खां", "उस्ताद अलाउद्दीन खां" और "सेम्मनगुडी" तीन फिल्मों का प्रदर्शन किया गया था।

युवा रंगकर्मियों के लिए कार्यशाला

अकादेमी ने 'युवा रंगकर्मियों को सहायता' योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष चार से पाँच कार्यशालाएँ आयोजित करने का कार्यक्रम शुरू किया है। इसका उद्देश्य युवा पीढ़ी के रंगकर्मियों को समकालीन रंगमंच में समेकित प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है। रंगकर्म में आधारभूत प्रशिक्षण के साथ राज्यों की पारंपरिक एवं लोक संस्कृति पर भी जोर दिया जाता है। प्रशिक्षण के व्यावहारिक पहलुओं में मूकाभिनय, गति, ध्वनि एवं वाचन, मंच, प्रकाश व्यवस्था, पोशाक सज्जा, रंगमंच-संगीत आदि में कक्षाएँ आयोजित करना शामिल है। प्रशिक्षुओं को यह भी सिखाया जाता है कि उनके क्षेत्र में उपलब्ध देशी सामग्री का उपयोग कैसे करना है और उनके प्रयोग करने के लिए जो भी संसाधन एवं सामग्री उनके पास उपलब्ध है उसे कैसे अनुकूल बनाना है। अन्य राज्यों से आमंत्रित विशेषज्ञों के अलावा स्थानीय विशेषज्ञों को भी कार्यशाला में योगदान करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। संबद्ध कलाओं में व्याख्यान-निदर्शन के साथ सहायक सामग्री भी दी जाती है तथा प्रदेश के लोक एवं पारंपरिक कलारूपों का प्रदर्शन भी किया जाता है। प्रतिभागियों के लाभ के लिए अकादेमी के अभिलेखागार में उपलब्ध रंगमंच संबंधी वीडियो रिकार्डिंग भी दिखायी जाती है। इन कार्यशालाओं का आयोजन क्षेत्रवार किया जाता है तथा सामान्यतः राज्यों के संस्कृति विभाग या प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में काम कर रही अन्य संस्थाओं के सहयोग से किया जाता है।

आयोजित की गई कार्यशालाओं का विवरण इस प्रकार है :

राउरकेला (17 मई - 15 जून, 2003)
कार्यशाला निदेशक : अशोक मुखोपाध्याय और लालतेंदू रथ

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, अकादेमी ने भारतीय इस्पात प्राधिकरण, राउरकेला इस्पात संयंत्र, राउरकेला के सहयोग से राउकेला में 17 मई से 15 जून, 2003 तक युवा रंगकर्मियों के लिए एक आवासीय कार्यशाला का आयोजन किया। पूर्वी क्षेत्र में शृंखला की यह तीसरी कार्यशाला थी। अकादेमी को कुल 72 आवेदन-पत्र प्राप्त हुए थे। कार्यशाला के लिए 34 युवा रंगकार्मियों का चयन किया गया था।

श्री अशोक मुखोपाध्याय और श्री लालतेंदू रथ क्रमशः कैम्प निदेशक और समन्वयक थे। अतिथि विशेषज्ञों में आलोक चटर्जी, मोइन-उल-हक, नरेंद्र शर्मा, रुद्रप्रसाद सेनगुप्ता, स्वातिलेख सेनगुप्ता, समिक बंधोपाध्याय, सलिल सरकार, सत्यव्रत राउत, वी. राममूर्ति और जे.एन. कौशल शामिल थे। कार्यशाला में आमंत्रित क्षेत्रीय विशेषज्ञों में डी. एन. पटनायक, ध्रुव विस्वाल, कृष्ण चंद्र साहू, नवघन पांडे, ईश्वर चंद्र गड़गरिया और के.सी. बेहेरा सम्मिलित थे।

आनंदग्राम (13 जुलाई - 22 सितंबर, 2003)
कार्यशाला निदेशक : जे. एन. कौशल

कलाकारों को उच्च स्तरीय रंगमंच प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अकादेमी ने हिमाचल प्रदेश (शिमला), पंजाब (अमृतसर), जम्मू और कश्मीर (जम्मू/मनसर), हरियाणा/चडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र (चडीगढ़) और उत्तरांचल (देहरादून) में प्रथम चरण की कार्यशालाओं का आयोजन किया जिनमें क्रमशः जे. एन. कौशल, डॉ. आतमजीत सिंह, बी.आर. भार्गव, डॉली ए. तिवारी और ललित मोहन थपलियाल कैंप निदेशक थे।

युवा रंगकर्मी कार्यशाला दूसरे चरण की (इस परिमाण की यह पहली) मार्गदर्शी परियोजना थी जिसके लिए अति सावधानी पूर्वक योजना तैयार करने, नवीन प्रक्रिया अपनाने और समय प्रबंध और संकाय योगदान के साथ पर्याप्त प्रयोग की आवश्यकता होती है। रंगमंच की सलाहकार समिति ने एक ऐसे मौलिक उच्च प्रशिक्षण के लिए रूपरेखा की सिफारिश की है जो प्रशिक्षणार्थियों को उस ज्ञान को समेकित करने के लिए बृहत प्रशिक्षण प्रदान करेगा जिसे उन्होंने प्रथम चरण में प्राप्त किया है और उन्हें उनकी भावी दिशा के बारे में निर्णय करने में सहायक होगा।

योग और वाक्-प्रशिक्षण के लिए कोर संकाय में श्री सुब्बा राव सम्मिलित हैं। श्री नरेंद्र शर्मा ने अपनी गति कक्षाओं के जरिए फुरतीलेपन और शरीर लयों की संवेदना को उत्पन्न किया है और श्री निरंजन गोस्वामी ने चरण 1 कक्षाओं में किए गए कार्य को, अभिनय की कला के एक अभिन्न अंग-मूकाभिनय के नए अभ्यासों को जोड़कर अद्यतन किया है। सुश्री त्रिपुरारी शर्मा ने विश्व में प्रचलित अभिनय अभ्यास के विभिन्न सिद्धांतों को सिखाया। श्री सतीश आनंद ने अपनी अभिनय (अभ्यास) कक्षाओं में वाक्, वाक् और कथन-शैली; आशुक्रिया, प्रेरणा, प्रेक्षण अभ्यास-दृश्य कार्य और चरित्र विश्लेषण आदि पर व्यापक रूप से कार्य किया। श्री जयदेव तनेजा (आधुनिक भारतीय नाटक), सुश्री अनुराधा कपूर (विश्व नाटक) और डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाठी (शास्त्रीय भारतीय नाटक) ने भी कक्षाओं का संचालन किया। श्री एच. वी. शर्मा की दृश्य डिजाइन कक्षाएँ सिद्धांतों को सिखाने तक

ही सीमित नहीं थीं बल्कि उनमें रेखाचित्र मॉडल बनाना और दृश्य डिजाइन के लिए चुनिंदा खुले स्थानों और भवनों का उपयोग भी शामिल था। श्री सुरेश भारद्वाज ने छात्रों को अपनी मंच प्रकाश कक्षाओं में नवीनतम अंकीय और कंप्यूटरीकृत प्रकाश उपस्करों से अवगत कराया और प्रकाशमंदकों और केंद्रित प्रकाश जैसे प्रकाश उपस्करों को प्रयोग करने के तरीके सिखाए। श्री सुधीर कुलकर्णी ने मंच एवं रूप सज्जा की नई तकनीकों और सामग्रियों से परिचित कराया और श्री सत्यव्रत राउत ने छात्रों को उन्हें देशज सामग्री की सहायता से मुखौटे बनाना सिखाया। सुश्री डॉली ए. तिवारी ने विषय, प्रदर्शन, चरित्र-चित्रण आदि से संबंधित डिजाइन की आवश्यकताओं और पोशाकों के डिजाइन के लिए व्यवहार्य विधियों और सामग्री पर ध्यान केंद्रित किया। श्री भास्कर चंदावरकर ने अपने रंगमंच संगीत की कक्षाओं में नाटकीय स्थितियों को प्रशिक्षण प्रक्रिया से संबंधित किया, विभिन्न वाद्ययंत्रों का परिचय कराया और रिकार्ड किए गए संगीत और अन्य ध्वनि प्रभावों के लिए उपलब्ध स्रोतों, उपयुक्त संगीत की चयन प्रक्रिया, रिकार्ड करने की और इसे प्रदर्शन में चलाने की प्रक्रिया के संबंध में सूचना का आदान-प्रदान किया।

कार्यशाला में भाग लेने वालों में विशाल कुमार, नारायण अंशीमन कुमार सिन्हा, हर्ष लता चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र से; सुरेंद्र सैनी, हरीश ग्वाल, मनोज कुमार भट्ट, कांता प्रसाद, आशीष शर्मा, पूजा रावत, दीपती ध्यानी उत्तरांचल से; विनय वर्मा, प्रीतम चंद, जावेद इकबाल, सुरजीत सिंह ठाकुर, ललित भारद्वाज, संतोष कुमार, कौशल, रूपेश नंदन हिमाचल प्रदेश से; अमरदीप सिंह, हरनेक सिंह, गुरविन्दर सिंह पंजाब से; शबद खां, नरिन्दर शर्मा और आकृति साहनी जम्मू एवं कश्मीर से शामिल थे।

श्री जयंत कस्तुआर, सचिव, संगीत नाटक अकादेमी की अध्यक्षता वाली कार्यशाला का उद्घाटन 13 जुलाई, 2003 को श्री ओ.पी. जैन, अध्यक्ष, संस्कृति केंद्र, आनंद ग्राम, नई दिल्ली द्वारा किया गया था।

समापन समारोह के दौरान छात्रों द्वारा ईडिपस रेक्स, तुगलक और भागवत जुकियम् से दृश्य प्रस्तुत, अभिकल्पित, निर्देशित और अभिनीत किए गए थे। इस अवसर पर बहुत-से प्रतिष्ठित रंगमंच कलाकार और मीडिया के लोग उपस्थित थे। श्री श्यामानंद जालान, उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी ने 22 जुलाई, 2003 को आनंदग्राम में उत्तर क्षेत्र चरण-II युवा रंगकर्मी कार्यशाला में भाग लेने वालों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

ओडिसी नृत्य के संदर्भ में उड़ीसा की प्रदर्शन कला परंपराओं पर परिसंवाद और कार्यशाला

ओडिसी नृत्य के संदर्भ में उड़ीसा की प्रदर्शन कला परंपराओं पर एक परिसंवाद और कार्यशाला का आयोजन 11 से 14 मई, 2003 तक पुरी में किया गया था। अकादेमी द्वारा कार्यक्रम की शृंखला में उड़ीसा में आयोजित यह कार्यक्रम अंतिम था जिसमें ओडिसी नृत्य पर ध्यान केंद्रित किया गया था। कार्यक्रम में पाल, रास, गीती नाट्य, महारी, गोतीपुआ, घंटा, मरदल, ताल मृदंग, संचार, संकीर्तन, छऊ, शब्द नृत्य, साही जात्रा और प्रह्लाद नाटक आदि जैसे कला रूपों पर प्रदर्शन, निदर्शन, लेख प्रस्तुतिकरण और वाद-विवाद शामिल थे जिन्हें प्रतिष्ठित गुरुओं, शिक्षकों, प्रदर्शनकर्ताओं, संगीतज्ञों और विद्वानों ने प्रस्तुत किया था। परिसंवाद में मुख्य भाषण श्रीमती सोनल मानसिंह, अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी द्वारा दिया गया। समस्त कार्यक्रम की दृश्य-श्रव्य रिकार्डिंग सं.ना.अ. के अभिलेखागार के लिए की गई थी।

11 मई
9.30 प्रातः : पंजीकरण
9.45 प्रातः : जलपान
10.30 प्रातः : उद्घाटन सत्र
स्वागत : श्रीमती अरुणा मोंहती
मुख्य भाषण : श्रीमती सोनल मानसिंह
सत्र का प्रारम्भिक भाषण : श्रीमती प्रियंवदा **महांती हेजमादी**
उद्घाटन : गुरु केलूचरण महापात्र

सत्र I
10.45 प्रातः - 2.00 सायं : पाल (तटीय **उड़ीसा, कटक और** पुरी)
अध्यक्षा : श्रीमती कुमकुम महांती
पेपर प्रस्तुति : श्रीमती सोनल मानसिंह
निदर्शन/प्रदर्शन : श्री शंकरशन दाश एवं समूह, जयपुर; श्री गोविंद चंद्र पाणिग्रही एवं समूह, किओनझार
अनुप्रयोग : श्रीमती सोनल मानसिंह; श्रीमती अरुणा महांती
'पाल का सौंदर्यशास्त्र' : श्री चन्द्रशेखर रथ
संगीतज्ञ दृष्टिकोण : श्री बंकिम सेठी, दिल्ली; श्री रमा हरि दास, भुवनेश्वर

सत्र II
3.30 सायं - 7.30 सायं : गीति नाट्य (तटीय उड़ीसा, कटक और पुरी)
अध्यक्ष : श्री डी. एन. पट्टनायक
पेपर प्रस्तुति : श्री कृष्ण चरन पट्टनायक, भुवनेश्वर
निदर्शन : श्री बिंबाधर दास एवं समूह, भुवनेश्वर
अनुप्रयोग : श्री गंगाधर प्रधान एवं शिष्य, भुवनेश्वर
संगीतज्ञ दृष्टिकोण : श्री लक्ष्मीकांत पालित, भुवनेश्वर
नर्तक दृष्टिकोण : श्री रमाणी रंजन जैना
गुरु की टिप्पणी : श्री केलूचरण मोहपात्र

12 मई

सत्र III
9.30 प्रातः - 1.30 सायं रास (तटीय उड़ीसा, कटक और पुरी)
अध्यक्ष : श्री जयंत कस्तुआर
पेपर प्रस्तुति : श्री रामहरि दास
निदर्शन : श्री बटराज देव गोस्वामी एवं दल, पुरी
'रास में अभिनय' : श्री दुर्लभ चंद्र सिंह, पुरी
अनुप्रयोग : रतिकांत महापात्र, सुजाता मोहंती एवं शिष्यों के साथ श्री केलूचरण महापात्र

सत्र IV
3.30 सायं - 5.45 सायं : माहारी
अध्यक्ष : श्रीमती सोनल मानसिंह
पेपर प्रस्तुति : श्रीमती प्रियंवदा महांती हेजमादी
निदर्शन : श्रीमती ससीमणि, पुरी; श्रीमती पारसमणि एवं शिष्य, पुरी
अनुप्रयोग : श्रीमती विजय लक्ष्मी दास, भुवनेश्वर; श्रीमती शर्मिला विश्वास, कोलकाता
संतीतज्ञ का दृष्टिकोण : श्री गोपाल चंद्र पांडा, भुवनेश्वर

सत्र V
6.15-8.15 सायं : गोतिपुआ (तटीय उड़ीसा, कटक एवं पुरी)
अध्यक्ष : श्रीमती माधवी मुद्गल
पेपर प्रस्तुति : श्री चितरंजन मल्ला, भुवनेश्वर
निदर्शन : श्री बीरबर-साहू एवं समूह, कोणार्क
अनुप्रयोग : श्री गंगाधर प्रधान; श्रीमती आलेका कानूनगो, कोलकाता
संगीतज्ञ का दृष्टिकोण : श्री रघुनाथ पाणिग्राही

13 मई

सत्र VI
9.30 प्रातः - 11.30 प्रातः : घंटा मरदाला (तटीय उड़ीसा, पुरी एवं गंजम)
अध्यक्ष : श्रीमती कुमकुम महांती
पेपर प्रस्तुति : श्री सच्चिदानंद दास, भुवनेश्वर
निदर्शन : श्री नरेश चंद्र बेहेरा एवं समूह, व्लांगा
अनुप्रयोग : श्री सच्चिदानंद दास
संगीतज्ञ का दृष्टिकोण : श्री बनमाली महारणा, भुवनेश्वर
गुरु-टिप्पणी : श्री केलचूरण महापात्र

सत्र VII
11.45 प्रातः - 2.00 सायं : ताल मृदंग (दक्षिणी उड़ीसा एवं गंजम)
अध्यक्ष : श्री प्रफुल्ल कार
पेपर प्रस्तुति : श्री चंदा चरण दास, भुवनेश्वर
निदर्शन : श्री धनुर्धार रेड्डी एवं समूह, गंजम
अनुप्रयोग : श्रीमती शर्मिला विश्वास
संगीतज्ञ का दृष्टिकोण : श्री बनमाली महारणा, भुवनेश्वर
नर्तक का दृष्टिकोण : श्रीमती कुमकुम महांती, भुवनेश्वर

सत्र VIII
3.30 सायं - 6.00 सायं : संचार (पश्चिमी उड़ीसा, सम्बलपुर, बारागढ़)
अध्यक्ष : श्रीमती माधवी मुद्गल
निदर्शन : श्री दुखनाशन बेहेरा एवं समूह, सम्बलपुर
नर्तक का दृष्टिकोण : श्री रतिकांत महापात्र

सत्र IX
6.15 सायं - 7.45 सायं : संकीर्तन (नादिया और उड़िया) (संपूर्ण उड़ीसा)
अध्यक्ष : श्री दामोदर होता
पेपर प्रस्तुति : श्रीमती संगीता गौसेन, भुवनेश्वर
निदर्शन : श्री प्रह्लाद बराला एवं समूह, पीपिली
ओडिसी में अनुप्रयोग : श्री कालंदी चरण परीदा, भुवनेश्वर
नृत्य संगीत : श्री सच्चिदानंद दास
नर्तक का दृष्टिकोण : श्रीमती माधवी मुद्गल, श्रीमती कुमकुम महांती

14 मई

सत्र X
9.00 प्रातः - 12.00 मध्याह्न : छऊ (उत्तर उड़ीसा, मयूरभंज)
अध्यक्ष : श्रीमती सोनल मानसिंह
पेपर प्रस्तुति : श्री डी. एन. पटनायक
निदर्शन : श्री श्रीहरि नायक, बारिपदा, मयूर आर्ट सेंटर, भुवनेश्वर
तुलनात्मक विश्लेषण : श्री नबा किशोर मिश्रा, भुवनेश्वर; श्री सुब्रत कुमार पटनायक, भुवनेश्वर
अनुप्रयोग : श्रीमती इलियाना सितारिस्ती, भुवनेश्वर; श्रीमती रंजना गौहर, दिल्ली

सत्र XI
12.15 मध्याह्न - 2.15 सायं : शब्द नृत्य (पश्चिमी उड़ीसा, बारागढ़)
अध्यक्ष : श्रीमती लीला वेंकटरमन
निदर्शन : श्री भागवत प्रधान एवं समूह, बारागढ़
अनुप्रयोग : श्रीमती सुजाता मिश्रा, भुवनेश्वर; श्री भरत गिरी, भुवनेश्वर
नर्तक का दृष्टिकोण : श्रीमती आलोका कानूनगो

सत्र XII
3.30 सायं - 5.15 सायं : साही जात्रा (तटीय उड़ीसा, पुरी)
अध्यक्ष : श्रीमती सोनल मानसिंह
पेपर प्रस्तुति : श्री देवदत्त सामंत सिंघर
निदर्शन : उद्यान कल्चरल एकाडेमी, पुरी
अनुप्रयोग : श्रीमती कुमकुम महांती एवं समूह ओडिसी रिसर्च सेंटर, भुवनेश्वर से

सत्र XIII
5.30 सायं - 8.00 सायं : प्रह्लाद नाटक (दक्षिणी उड़ीसा, गंजम)
अध्यक्ष : श्री डी. एन. पटनायक
प्रदर्शन : श्री कृष्ण चंद्र साहू एवं समूह, गंजम
अनुप्रयोग : श्री गजेंद्र पांडा, भुवनेश्वर; श्रीमती कुमकुम महांती

8.00 सायं - समापन सत्र

उत्तर-पूर्व में कार्यक्रम/उत्सव

पारंपरिक नाट्य समारोह

उत्तर-पूर्व में भारतीय पारंपरिक रंगमंच उत्सव

भारत के पारंपरिक रंगमंच रूपों में भाषाई रूप से भिन्नता होते हुए भी उनके अनेक लक्षण एक समान हैं। ये कलाएँ न केवल प्रस्तुति मूलक शैलियों की व्यापक विविधता को प्रदर्शित करती हैं बल्कि इनमें महत्वपूर्ण आख्यात्मक और संदर्भगत समानताएँ और रीतिबद्धता और आनुष्ठानिक प्रदर्शन परंपराओं का उच्च स्तर विद्यमान है। महाकाव्य, पुराण, क्षेत्रीय लोककथा और गाथागीत इन्हें एक सामान्य सूत्र प्रदान करते हैं। उनकी कलात्मक दृष्टि में अन्विती की सुपारिभाषित पद्धति के भीतर रहते हुए परिवर्तन, आशोधन और गतिकता की स्वीकृति के अंतर्निर्मित तंत्र बनाए रखने की दृष्टि से तथा उत्तर-पूर्व क्षेत्र में कलाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण और रंगमंच परंपराओं के विकास दोनों ही प्रकार से महत्वपूर्ण प्रभाव के लिए संगीत नाटक अकादेमी ने अपने स्वर्ण जयंती समारोहों के एक भाग के रूप में दो चरणों में उत्तर पूर्व राज्यों और सिक्किम में पारंपारिक नाट्य समारोहों का आयोजन किया।

समारोह के प्रथम चरण का आयोजन गुवाहाटी में (28 मार्च - 2 अप्रैल, 2003); दीमापुर में (1-3 अप्रैल, 2003); शिलांग में (3-5 अप्रैल, 2003), डिब्रूगढ़ में (4-5 अप्रैल, 2003) तेजपुर में (6-7 अप्रैल, 2003); इम्फाल में (8-10 अप्रैल, 2003); और ईटा नगर में (9-11 अप्रैल, 2003) को उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर; सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, असम सरकार, गुवाहाटी; कला एवं संस्कृति निदेशालय, मेघालय सरकार, शिलांग; कला एवं संस्कृति निदेशालय, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटा नगर और जवाहर लाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडेमी, इम्फाल के सहयोग से किया गया था।

क्षेत्र के परंपरागत नाट्य रूपों के अलावा प्रस्तुत किए गए अन्य पारंपररिक नाट्य रूप निम्न हैं : (1) उड़ीसा का प्रह्लाद नाटक, श्री कृष्णचंद्र साहू एवं पार्टी, गंजम द्वारा; (2) तमिलनाडु का तेरूकूत्तू, पुरिसई दुरैस्वामी कन्नप्पा तांबीरान परमबारी तेरुकूत्तू मनरम, चेन्नई द्वारा; (3) असम का *अंकियानट*, श्री जतिन गोस्वामी एवं पार्टी, गुवाहाटी द्वारा; (4) कर्नाटक का *श्री कृष्ण पारिजात* श्री मल्लिकार्जुन मुद्कवि एवं पार्टी, होस्पेट द्वारा; (5) महाराष्ट्र का *तमाशा* श्री शेख जेनू चंद एवं पार्टी, मुंबई द्वारा; (6) उत्तर प्रदेश की *नौटंकी* अंकुर नाट्य समिति, इलाहाबाद द्वारा; (7) हिमाचल प्रदेश का *करयाला*/करयाला नाट्य दल, शिमला द्वारा; (8) राजस्थान का *ख्याल* बंसीलाल खिलाड़ी एवं पार्टी, जोधपुर द्वारा; (9) आंध्र प्रदेश की *ओग्गूकथा* चुक्का सतैया एवं पार्टी, वारांगल द्वारा; (10) बिहार का *नटुआ नाच* बटोही, बिहार लोक विद्या संस्थान, सहरसा द्वारा; (11) पश्चिम बंगाल का *गंभीरा* कुतुबपुर गंभीरा दल, माल्दा द्वारा; (12) छत्तीसगढ़ का *नाच* रविलाल संगदे नाथ पार्टी, भोपाल द्वारा; और (13) जम्मू एवं कश्मीर का *भांड पथेर* नेशनल भांड थिएटर, कश्मीर द्वारा।

दूसरे चरण के समारोह का आयोजन गंगटोक में (11-13 मई, 2003); अगरतला में (18-20 मई, 2003); ऐजल में (22-24 मई, 2003); और न्यू जलपाइगुढ़ी में (9-11 मई, 2003) सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, असम; सूचना, सांस्कृतिक कार्य और पर्यटन निदेशालय, त्रिपुरा; कला और सांस्कृतिक निदेशालय, मिजोरम; और सांस्कृतिक कार्य विभाग, सिक्किम के सहयोग से किया गया था।

उत्तर-पूर्व क्षेत्र के परंपरागत नाट्य रूपों के अतिरिक्त, दूसरे चरण में प्रस्तुत किए गए अन्य परंपरागत नाट्य रूप निम्न हैं : (1) कर्नाटक का *यक्षगान* यक्षगान केंद्र, उडुपी द्वारा; (2) गुजरात की *भवई* सरवद भवई मंडल, राजकोट द्वारा; (3) मध्य प्रदेश का *माच* माल्वा लोक नाट्यमंच मंडल, उज्जैन द्वारा; (4) असम का *धुलिया भाओना* कइहाती धूलिया भाओना दल, नलबारी द्वारा; (5) गोवा का *तिआत्रों* यूथ एसोशिएशन, वास्को द्वारा; और (6) हरियाणा का *सांग* पंडित लखमी चंद सांग पाटी, सोनीपत द्वारा।

मणिपुर में अन्योन्यक्रिया कार्यक्रम

हबीब तनवीर ने अपने नया थिएटर, भोपाल के दल के साथ इस कार्यक्रम के अंतर्गत 1-5 अप्रैल, 2003 तक मणिपुर का दौरा किया। उन्होंने कॉरस रेपर्टरी थिएटर, इम्फाल के प्लेहाउस द् श्राइन में अपने नाटक चरण दास चोर और गांव का नाम ससुराल मोरे नाम दामाद प्रस्तुत किए। हबीब तनवीर ने अपनी प्रस्तुति प्रक्रिया और अपने कार्यों का उल्लेख किया। मणिपुर के पचास युवा रंगकर्मियों ने इस आवासीय 5-दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन कॉरस रेपर्टरी थिएटर, इम्फाल के सहयोग से किया गया था। श्री रतन थियम ने अन्योन्यक्रिया सत्रों का समन्वय किया। इस कार्यक्रम का प्रलेखन अकादेमी के उप-सचिव (प्रलेखन) की उपस्थिति में अपने अभिलेखागार में किया गया था।

सत्रिय नृत्य और संबद्ध पंरपरा को समर्थन की

परियोजना के तहत गुवाहाटी में चयन और श्रवण किया गया था और एक प्रशिक्षण कार्यक्रम गुरु श्री जतिन गोस्वामी, गुरु श्री घनकांत बरा; गुरु श्री गोविंद साइकिया और गुरु श्री प्रभात शर्मा की देखरेख में शुरू किया गया।

नृत्य पर्व

सत्रिय नृत्योत्सव, गुवाहाटी

15, 16 और 18 नवंबर, 2003 को गुवाहाटी में सत्रिय नृत्योत्सव *नृत्यपर्व* का आयोजन सत्रिय नृत्य और संगीत और रंगमंच की संबद्ध परंपराओं को समर्थन की विशेष परियोजना में भाग के रूप में किया गया था। चूँकि यह परियोजना में वार्षिक समारोह के रूप में अनुमोदित है अतः अकादेमी ने 2002 और 2003 में 'नृत्य पर्व' का आयोजन करके प्रातःकाल में वरिष्ठ कलाकारों द्वारा व्याख्यान-निदर्शन का कार्यक्रम रखा और सायंकाल में सत्रिय नृत्य के युवा कलाकारों को प्रदर्शित किया। इस कार्यक्रम से उभरते सत्रिय नर्तकों को एक मंच उपलब्ध हुआ है और इसे जनता और मीडिया द्वारा सराहा गया है। इस कार्यक्रम में नृत्य सलाहकार समिति, सत्रिय समिति के कुछ सदस्यों और राज्य के बाहर से गिने-चुने नृत्य समीक्षकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम इस प्रकार था :

15 नवंबर
बारदोवा सत्र (गायन-बायन), गोलप बरुआ, सीतारानी हजारिका, परिष्मिता भराली एवं रूपशिखा सलोई, बोंदिता दत्त, तपाशी हजारिका एवं स्वाति चालिहा, शरदी साइकिया

16 नवंबर
व्याख्यान-निदर्शन : तनुजा बोरह, नरेन कलिता

16 नवंबर
नतुन कमलाबारी सत्र, प्रभाकर गोस्वामी, अनवेष महंत, मृगाक्षी बोरदोलोई एवं बरनाली महंता, नरेन बरुआ, ज्ञानश्री बोहरा एवं परि बोहरा, गोबिंद साइकिया

18 नवंबर
व्याख्यान-निदर्शन : अनिल साइकिया, प्रफुल्ल बरुआ बयान

18 नवंबर
नतुन भोगपुर सत्र, भाबनंद बरबयान, कल्पना बरुआ, मृदुस्मिता डेका एवं सुस्मिता दास, ककाली हजारिका, योगज्योति बरुआ एवं रुमिणि बरुआ गरिमा हजारिका

झारखंड स्थापना दिवस के अवसर पर झारखंड सरकार के सहयोग से 22-24 नवंबर, 2003 तक एक्स एल आर आई, ऑडिटोरियम, जमशेदपुर में एक **संगीत और नृत्य के उत्सव** का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर निम्नलिखित कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था :

22 नवंबर
बुद्धदेव दास गुप्ता (सरोद), केलूचरण महापात्र (ओडिसी नृत्य), सुजाता और रतिकांत और सृजन, भुवनेश्वर के कलाकारों के साथ

23 नवंबर
लंगा और मंगाणियार गायक (राजस्थान का परंपरागत संगीत), मलाविका मित्र (कथक नृत्य), राम नारायण (सारंगी)

24 नवंबर
राजा एवं राधा रेड्डी (कूचिपूडी नृत्य), भारतभूषण गोस्वामी (सारंगी)*

* *हिन्दुस्तानी संगीत गायिका श्रीमती सुलोचना ब्रहस्पति का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उनके प्रदर्शन के स्थान पर श्री गोस्वामी ने अपनी कला का प्रदर्शन किया।*

पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं का संवर्धन एवं परिरक्षण

इस योजना के अन्तर्गत संगीत, नृत्य और नाट्यकला के उन रूपों में प्रशिक्षण के लिए सहायता प्रदान की जाती है, जो अब व्यापक रूप से व्यवहार में नहीं हैं। इसमें अकादेमी शिक्षकों को मानदेय और प्रशिक्षार्थियों को वजीफे देकर इन कला रूपों में उनकी रूचि सुनिश्चित करती है और परंपरागत प्रशिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के द्वारा उन्हें बनाए रखने का प्रयत्न करती है। प्रशिक्षण के विवरण की नियमित रूप से रिपोर्ट की जाती है।

प्रशिक्षण के अतिरिक्त, इस योजना में परंपरागत कलाओं को अपना रहे परिवारों और घरानों में, उन युवा कलाकारों को सहायत्ता प्रदान करने की भी व्यवस्था है, जिन्हें अन्यथा सामान्य रूप से सहायता प्राप्त नहीं होती है।

संगीत और नृत्य में विशेष प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय केंद्रों की स्थापना

'संगीत और नृत्य में विशेष प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय केंद्रों की स्थापना' योजना के अंतर्गत अकादेमी ने कूटियाट्टम और सराईकेला, मयूरभंज और पुरूलिया के छऊ नृत्यों की उन कलात्मक पंरपराओं के रूप में पहचान की है, जो अब लुप्त होती जा रही हैं। अकादेमी द्वारा विद्यमान प्रशिक्षण केंद्रों को सुदृढ़ करने के साथ-साथ नए केंद्रों की स्थापना के लिए समर्थन दिया जा रहा है।

कूटियाट्टम को समर्थन

'संगीत एवं नृत्य में राष्ट्रीय केद्रों की स्थापना' योजना के अंतर्गत अकादेमी निम्नलिखित संस्थानों को प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने एवं प्रदर्शन के लिए आर्थिक सहायता देती है।

(क) मार्गी, तिरूवनंतपुरम

मई, 1991 से ही अकादेमी प्रशिक्षित कलाकारों को नियमित प्रदर्शन के अवसर उपलब्ध कराती आ रही है। जुलाई, 2000 से पुराने नाटकों का अनुप्राणन एवं प्रस्तुतिकरण भी शुरू किया गया है। अकादेमी, कलाकारों को वार्षिक अनुदान के अलावा एक माह में दो प्रदर्शनों (वर्ष में 24 प्रदर्शनों) पर होने वाले व्यय की पूर्ति के लिए आर्थिक सहायता भी देती है। अकादेमी अन्य एजेंसियों/सरकार के अनुरोध पर कलाकारों को प्रायोजित भी करती है।

(ख) अम्मानूर चाचु चाक्यार स्मारक गुरुकुलम, इरिंञालकुडा

अकादेमी कूटियाट्टम को समर्थन देने की परियोजना के अंतर्गत मई, 1991 से ही गुरुकुलम को वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है। इसमें पारंपरिक गुरुकुलम परंपरा के अनुसार अनौपचारिक अंतरंगता के वातावरण में व्यक्तिगत प्रशिक्षण के सर्वोत्तम घटकों को सम्मिलित करते हुए वृद्ध हो रहे गुरुओं से कूटियाट्टम कला का अंतरण युवा पीढ़ी को करने की प्रक्रिया पद्धति को सुनिश्चित करने एवं उसका समर्थन करने का उद्देश्य निहित है।

(ग) गुरु पी. के. नारायण नाम्बियार के मार्गदर्शन में मिषाववादन में प्रशिक्षण, लक्किडी

गुरु पी. के. नारायण नाम्बियार के मार्गदर्शन में मिषाव वादन का प्रशिक्षण भी शुरू किया गया है।

(घ) केरल कलामंडलम, चेरूतुरुत्ती

केरल कलामंडलम चेरूतुरुत्ती को प्रशिक्षित कलाकारों द्वारा वर्ष में 12 प्रदर्शनों के लिए रु. 5000/- प्रति प्रदर्शन की दर से वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

(ङ) गुरु के. जी. नाम्बियार के मार्गदर्शन में पताकम में प्रशिक्षण

गुरु पी. के . नारायण नाम्बियार के मार्गदर्शन में मिषाव वादन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों को गुरु पी. के. जी. नाम्बियार के अधीन पताकम और विदूषक की भूमिका का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। श्री नाम्बियार को रु. 2500 की दर से मासिक पारिश्रमिक दिया जा रहा है।

मयूरभंज के छऊ नृत्य को समर्थन

अकादेमी ने मयूरभंज के छऊ नृत्य को समर्थन देने की अपनी परियोजना के अंतर्गत बारीपदा और रैरंगपुर (उड़ीसा) में प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। अकादेमी ने नृत्य और संगीत में प्रशिक्षित कलाकारों के साथ अपनी रेपर्टरी की शुरुआत की है। इस परियोजना के तहत कलाकारों ने अकादेमी द्वारा आयोजित महोत्सवों सहित भारत में व्यापक रूप से प्रदर्शन किए हैं। इस योजना के अन्तर्गत अकादेमी चैत्र पर्व आयोजित करने के लिए भी वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

सराईकेला के छऊ नृत्य को समर्थन

(क) गुरु लिंगराज आचार्य, सराईकेला के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण

गुरु लिंगराज आचार्य के मार्गदर्शन में जुलाई, 1998 से आचार्य छऊ नृत्य बिचित्र में सराईकेला छऊ नृत्य का प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया था। इस परियोजना के अन्तर्गत कलाकारों को अकादेमी विभिन्न उत्सवों में प्रायोजित करती है।

(ख) सरकारी छऊ नृत्य केंद्र, सराईकेला द्वारा समन्वित संगीत और नृत्य में प्रशिक्षण

सरकारी छऊ नृत्य केंद्र, सराईकेला द्वारा समन्वित संगीत और नृत्य और प्रशिक्षण कार्यक्रम सितंबर, 1998 में शुरू किया गया था। इस परियोजना के तहत कलाकारों को विभिन्न उत्सवों में प्रायोजित किया जाता है।

(ग) मुखौटा निर्माण में प्रशिक्षण

अकादेमी की सराईकेला छऊ नृत्य को समर्थन देने वाली परियोजना के अंतर्गत दो गुरुओं श्री सुशांत कुमार महापात्र एवं श्री कान्हाई लाल महारणा (प्रत्येक के अधीन चार प्रशिक्षणार्थी) के मार्गदर्शन में मुखौटा निर्माण में प्रशिक्षण कार्यक्रम मई, 2002 से शुरू किया गया है।

परंपरागत प्रदर्शन कलाओं का प्रशिक्षण और परिरक्षण

'परंपरागत प्रदर्शन कलाओं का प्रशिक्षण और परिरक्षण' योजना के तहत अकादमी में 1 अगस्त, 2003 को स्वर-परीक्षण का आयोजन डॉ. लीला ओमचारी के अधीन सोपान अष्टपदी गाने में प्रशिक्षण पाने वाले भावी प्रशिक्षणर्थियों के लिए किया गया था। निम्नलिखित सदस्य उस समय उपस्थित थे : डॉ. राधा वेंकटचलम, श्री कावालम पद्मनाभन, श्री सदानम राजगोपाल एवं सुश्री शर्बरी मुखर्जी, उपसचिव (संगीत)

समिति ने पाँच प्रशिक्षणर्थियों का स्वर-परीक्षण करके दो को डॉ. लीला ओमचारी के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए चुना। प्रशिक्षण कार्यक्रम 1 सितंबर, 2003 से शुरु हुआ।

मेघालय में खासी ढोल (स्किट) में और खासी परंपरागत गायन संगीत में प्रशिक्षण कार्यक्रम

2 और 3 सितंबर, 2003 को होटल पोलो हाई, शिलांग में खासी ढोल (स्किट) और खासी परंपरागत गायन संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षणार्थियों का चयन करने के लिए स्वर-परीक्षण का आयोजन किया गया था। आठ प्रशिक्षणर्थियों का स्वर-परीक्षण किया गया था जिनमें से गुरु खोंगजीरेम के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पाँच प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम 15 अक्तूबर, 2003 से प्रारंभ हुआ।

आंध्र लास्य परंपराएँ और भामाकल्पम में प्रशिक्षण

श्री कला कृष्ण के मार्गदर्शन में आंध्र लास्य परंपराओं में और गुरु वेदांतम् सत्यनारायण शर्मा के मार्गदर्शन में भामाकल्पम और कूचिपूडी यक्षगान की महिला भूमिकाओं में प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष के दौरान जारी रहे। अकादेमी द्वारा इन दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्षा 7 जून, 2003 को की गई थी।